mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-173 | पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

25 जून 2025 बुधवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

हॉकी खिलाड़ी ललित...

@ पेज 7

‘आपातकाल के समय मैं 11 साल का था, वो दिन कभी नहीं भूलूंगा’

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 25 जून 1975 को देश में आपातकाल की घोषणा की थी। आज आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर दिल्ली में %आपातकाल के 50 साल% कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में शामिल हुए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा, ÷आज आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या है। एक सवाल उठ सकता है कि 50 साल पहले हुई किसी घटना पर अब चर्चा क्यों हो रही है। जब किसी राष्ट्रीय घटना के 50 साल पूरे होते हैं, चाहे वह अच्छी हो या बुरी, समाज में उसकी याद धुंधली हो जाती है। अगर लोकतंत्र को हिला देने वाली आपातकाल जैसी घटना की स्मृति धुंधली हो जाती है तो यह देश के लिए हानिकारक है।÷

अमित शाह ने कहा कि वह लड़ाई इसलिए जीती गई क्योंकि इस देश में कोई भी तानाशाही बर्दाश्त नहीं कर सकता। भारत लोकतंत्र की जननी है। उस समय तानाशाहों और उससे लाभान्वित होने वाले छोटे समूह को छोड़कर कोई भी आपातकाल को पसंद नहीं करता। उन्हें भ्रम है कि कोई उन्हें चुनौती नहीं दे सकता, लेकिन आपातकाल के बाद जब पहली बार लोकसभा चुनाव हुए तो आजादी के बाद पहली बार गैर-कांग्रेसी सरकार बनी और मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने। आपातकाल को एक वाक्य में परिभाषित करना मुश्किल है। मैंने एक परिभाषा देने की कोशिश की है। ÷एक लोकतांत्रिक देश को बहुदलीय लोकतंत्र को तानाशाही में बदलने की साजिश ही आपातकाल है।÷

इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा, ÷कल्पना कीजिए कि आजाद होने के विचार के कारण आपको जेल भेजा जाए। हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि वह सुबह भारत के लोगों के लिए कितनी क्रूर रही होगी। जब आपातकाल की घोषणा की गई, तब मैं 11 साल का था। गुजरात में आपातकाल का असर काफी कम था, क्योंकि वहां जनता पार्टी की सरकार बनी थी, लेकिन बाद में जनता पार्टी की सरकार गिर गई। मैं एक छोटे से गांव से आता हूं। मेरे गांव से ही 184 लोगों को जेल भेजा गया था। मैं उस दिन और उन दृश्यों को मरते दम तक नहीं भूलूंगा।÷

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, ÷सुबह 8 बजे प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने ऑल इंडिया रेडियो पर घोषणा की कि राष्ट्रपति ने आपातकाल लगा दिया है। क्या संसद की मंजूरी ली गई थी? क्या कैबिनेट की बैठक बुलाई गई थी? क्या विपक्ष को विश्वास में लिया गया था? जो लोग आज लोकतंत्र की बात करते हैं, मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि वे उस पार्टी से जुड़े हैं जिसने लोकतंत्र को खा लिया। कारण बताया गया राष्ट्रीय सुरक्षा, लेकिन असली कारण सत्ता की रक्षा थी। इंदिरा गांधी पीएम थीं, लेकिन उन्हें संसद में वोट देने का अधिकार नहीं था। प्रधानमंत्री के तौर पर उनके पास कोई अधिकार नहीं था। उन्होंने नैतिकता का दामन छोड़ दिया और प्रधानमंत्री बने रहने का फैसला किया।÷

संक्षिप्त समाचार

अमेरिकी हमले के बाद भी ईरान बनाएगा परमाणु बम?

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका ने ईरान के 3 परमाणु स्थलों पर हमला किया था, जिसके बाद ऐसा कहा जा रहा था कि ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम के लक्ष्य से पीछे हट गया है। लेकिन ताजा मामला चौंकाने वाला है। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने एबीसी न्यूज को बताया कि पिछले सप्ताह ईरान के तीन परमाणु स्थलों पर अमेरिका के हवाई हमलों के बाद यूरेनियम का 400 किलोग्राम भंडार गायब हो गया है, जो 10 परमाणु हथियार बनाने के लिए पर्याप्त है। 60 प्रतिशत तक संवर्धित यूरेनियम को ईरान के प्रमुख स्थलों पर संग्रहीत किया गया था और अब माना जाता है कि हमले से पहले इसे हटा दिया गया था। वेंस ने कहा कि उन्हें लगता है कि ईरानी परमाणु स्थल गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त या नष्ट हो गए हैं लेकिन वह पूरी तरह निश्चित रूप से ये नहीं कह सकते। वेंस ने कहा कि ट्रंप प्रशासन पिछले

हफ्ते ईरानी परमाणु स्थलों पर अमेरिकी हमलों के बाद गायब हुए 900 पाउंड (लगभग 400 किलोग्राम) यूरेनियम के संबंध में आने वाले हफ्तों में ईरान के साथ बातचीत करेगा। एबीसी न्यूज से बात करते हुए, वेंस ने कहा, ÷हम आने वाले हफ्तों में यह सुनिश्चित करने के लिए काम करने जा रहे हैं कि हम उस ईंधन के साथ कुछ करें, और यह उन चीजों में से एक है जिसके बारे में हम ईरानियों के साथ बातचीत करने जा रहे हैं।÷ वेंस ने कहा कि ऑपरेशन का मुख्य उद्देश्य फ़ोर्डो परमाणु स्थल को निशाना बनाना था। जाहिर है, अन्य साइटों को भी कुछ नुकसान पहुंचा होगा लेकिन हमें पूरा भरोसा है कि फोर्डो परमाणु साइट को काफी नुकसान पहुंचाया गया था, और यही हमारा लक्ष्य था।

फ्रांस में म्यूजिक फेस्टिवल के दौरान 145 लोगों पर हुआ अटैक

पेरिस (एजेंसी)। फ्पेरिस~ फ्रांस में सालाना स्ट्रीट म्यूजिक फेस्टिवल के दौरान 145 लोगों को सिरिंज से सुई चुभो दी गई। इस घटना के बाद पुलिस ने 12 संदिग्धों को गिरफ्तार किया है। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, शनिवार की शाम को लाखों लोग फेते डे ला म्यूजिक के लिए फ्रांस की सड़कों पर उतरे थे और इस दौरान भारी भीड़ थी। भीड़ का फायदा उठाते हुए संदिग्धों ने लोगों पर स्4ह्लद्बठ्ठद्दद्ग अटैक किया गया।

फ्रांस पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आयोजन से पहले ही स्नैपचैट और अन्य सोशल मीडिया पर पोस्ट में म्यूजिक फेस्टिवल के दौरान महिलाओं को निशाना बनाने की बात कही गई थी। फ्रांस के गृह मंत्रालय ने बताया कि 145 पीड़ितों पर स्4ह्लद्बठ्ठद्दद्ग अटैक किए जाने की सूचना मिली है। गृह मंत्रालय की एक प्रवक्ता ने सीएनएन को बताया, ÷मंत्रालय इसे बहुत गंभीरता से ले रहा है। जांच जारी है।÷ अधिकारियों ने यह स्पष्ट नहीं किया कि क्या ये रोहिप्नोल (ऋश्द्ध4श्चठ्ठश्द्य) या जीएचबी जैसी डेट-रेप दवाओं के साथ सुई लगाने के मामले थे, जिनका उपयोग हमलावरों द्वारा पीड़ितों को भ्रमित या बेहोश करने और यौन हमले करने के लिए किया जाता है। मंत्रालय ने कहा, ÷कुछ पीड़ितों को जहर के परीक्षण के लिए अस्पताल ले जाया गया है।÷

दिल्ली पुलिस के एनकाउंटर में मारा गया कुख्यात शूटर

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने मुठभेड़ में एक बदमाश को मार गिराया है। एनकाउंटर दिल्ली-हरियाणा बॉर्डर पर हुआ है। मारे गए बदमाश की पहचान रोमिल वोहरा (20 वर्ष) के रूप में की गई है। रोहिल पर हरियाणा पुलिस ने एक लाख रुपये इनाम रखा हुआ था। उसके खिलाफ कई मामले भी दर्ज थे। दिल्ली पुलिस का कहना है कि रोमिल कुख्यात काला राणा-नोनी राणा गैंग का सक्रिय शूटर था। दिल्ली पुलिस ने बताया कि एनकाउंटर में मारे गए बदमाश ने कुछ दिनों पहले हरियाणा के यमुनानगर के रहने वाले एक बड़े शराब कारोबारी की हत्या की थी। रोमिल ने 14 जून को हरियाणा के कुरुक्षेत्र में शराब कारोबारी शांतनु की कई गोलियां मारकर हत्या की थी। शांतनु का 12 जिलों में शराब का कारोबार था। बदमाश पर हत्या और जबरन वसूली के कई मामले दर्ज थे। रोमिल दिल्ली में आर्म्स एक्ट के एक मामले में भी वांछित था। पुलिस ने बताया कि बीती रात में स्पेशल सेल को हरियाणा पुलिस से एक वांछित अपराधी रोमिल वोहरा पुत्र कपिल वोहरा निवासी यमुनानगर के बारे में सूचना प्राप्त हुई थी। डेरा मंडी के पास दिल्ली-हरियाणा सीमा के आसपास संयुक्त जांच अभियान चलाया गया। 24 जून 2025 की सुबह मुखबिर द्वारा रोमिल की पहचान की गई और पुलिस टीमों ने उसे पकड़ने का प्रयास किया। रोमिल ने पुलिस पार्टी पर फायरिंग की और भागने का प्रयास किया। पुलिस टीम ने आत्मरक्षा में फायरिंग की। पुलिस टीम के दो सदस्य एसआई प्रवीण और एसआई रोहन घायल हो गए। घायलों को अस्पताल ले जाया गया है।

सीजफायर के फैसले का स्वागत

ईरान-इजरायल के बीच सीजफायर के बाद भारत सरकार का बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान-इजरायल युद्ध और इसमें अमेरिका के हस्तक्षेप के बाद अब सीजफायर का ऐलान कर दिया गया है। बीते कई दिनों से चल रहे पूरे घटनाक्रम को लेकर अब भारत की तरफ से भी बयान जारी किया गया है। भारत ने ईरान और इजरायल के बीच किए गए सीजफायर का स्वागत किया है। इसके अलावा भारत ने इस बात पर जोर दिया है कि दोनों देशों को बातचीत और कूटनीति का रास्ता अपनाना चाहिए। भारत ने कहा कि वह पूरी स्थिति को लेकर ‘गंभीर रूप से चिंतित’ है, लेकिन ईरान और इजराइल के बीच सीजफायर की रिपोर्ट का स्वागत करता है। दरअसल, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान और इजयरायल के बीच सीजफायर का ऐलान किया है। इसके बाद से अब इस पर भारत की तरफ से बयान जारी किया गया है। भारत की ओर से विदेश मंत्रालय के एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट में बयान जारी किया गया है। पोस्ट में विदेश मंत्रालय ने कहा, ‘‘हम ईरान और इजराइल के बीच संघर्ष से संबंधित

घटनाक्रम पर रातभर नजर रख रहे हैं, जिसमें ईरान के परमाणु केंद्रों के खिलाफ अमेरिकी कार्रवाई और कतर में अमेरिकी सैन्य ठिकानों के खिलाफ ईरान की जवाबी कार्रवाई शामिल है।’’

विदेश मंत्रालय की ओर से आगे कहा गया, ‘‘यद्यपि हम समग्र और टिकाऊ क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता की संभावनाओं के बारे में गहराई से चिंतित हैं, हम ईरान और इजराइल के बीच सीजफायर से जुड़ी विभिन्न रिपोर्ट और इस दिशा में अमेरिका और कतर द्वारा निभाई गई भूमिका का स्वागत करते हैं।’’

विदेश मंत्रालय ने कहा, ‘‘हम दोहराना चाहते हैं कि क्षेत्र में विभिन्न संघर्षों को सुलझाने के लिए वार्ता और कूटनीति के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है।’’

सिंहस्थ कुंभ के लिए रेलवे चलाएगा 100 स्पेशल ट्रेनें

इंदौर (एजेंसी)। उज्जैन में साल 2028 में सिंहस्थ कुंभ का आयोजन होने वाला है। इस सिंहस्थ कुंभ के आजोयन को लेकर अभी से तैयारियां शुरू हो गई हैं। रेलवे की ओर से इस सिंहस्थ कुंभ में एक करोड़ लोगों के आने का अनुमान जताते हुए तैयारियां की जा रही हैं। रेलवे

का कहना है कि सिंहस्थ कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए 100 स्पेशल ट्रेनें भी चलाई जाएंगी, जिसके लिए रूट तैयार किए जा रहे हैं। बता दें कि सिंहस्थ कुंभ मेला भगवान शिव के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग वाली धार्मिक नगरी उज्जैन में हर 12 साल के अंतराल में क्षिप्रा नदी के तट पर लगता है। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष सतीश कुमार ने इंदौर में कहा, ‘‘वर्ष 2016 के दौरान आयोजित पिछले सिंहस्थ कुंभ मेले में करीब 20 लाख लोग रेल से सफर करके उज्जैन पहुंचे थे। हमारा अनुमान है कि 2028 के सिंहस्थ मेले में यह तादाद पांच गुना बढ़कर एक करोड़ के आस-पास पहुंचने वाली है।

धनकुबेर निकला प्रोजेक्ट इंजीनियर, घर पर भारी मात्रा में सोना-चांदी बरामद

लोकायुक्त ने इस इंजीनियर के घर पर छापा मारा

बेलगावी (एजेंसी)। कर्नाटक के बेलगावी में एक धनकुबेर इंजीनियर का भंडाफोड़ हुआ है। लोकायुक्त ने इस इंजीनियर के घर पर छापा मारा था, जिसमें भारी मात्रा में सोना और चांदी बरामद हुआ है। इसके अलावा बड़ी संख्या में संपत्ति के कागज बरामद किए गए हैं। प्रोजेक्ट इंजीनियर के आवास पर लोकायुक्त के छापे में भारी मात्रा में संपत्ति मिली है। एक बड़ी कार्रवाई में, लोकायुक्त अधिकारियों ने बेलगावी के रामतीर्थ नगर में मुख्य अभियंता अशोक वलसंड के आवास पर छापा मारा। छापे की कार्रवाई धारवाड़ में भी उनके आवास पर की गई। तलाशी के दौरान, अधिकारियों ने लगभग ?92.7 लाख मूल्य का 1 किलो 80 ग्राम सोना बरामद किया और लगभग ?3.96 लाख मूल्य की 3.5 किलोग्राम चांदी बरामद की। इसके अलावा ?1.5 लाख रुपए नकद मिले हैं। बड़ी संख्या में संपत्ति के दस्तावेज और संपत्ति के कागजात को बरामद किया गया है। लोकायुक्त टीम छापे के दौरान जब्त किए गए

प्रत्येक दस्तावेज और वस्तु की सावधानीपूर्वक जांच कर रही है।

इसी तरह की एक खबर मार्च 2025 में भी सामने आई थी। ओडिशा में परिवहन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी को गिरफ्तार किया गया था और उस पर 3 बहुमंजिला इमारतें, तीन फ्लैट, 11 प्लॉट और एक फार्महाउस जैसी बड़ी संख्या में संपत्ति अर्जित करने का आरोप था।

बुर्का पहनकर घर में घुसा बदमाश

लड़की को 5वीं मंजिल से फेंका नीचे, इलाज के दौरान हुई मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के ज्योति नगर इलाके में एक दिल दहला देने वाली घटना देखने को मिली है। दरअसल यहां 23 जून की सुबह 8 बजे, पुलिस को पीसीआर कॉल पर एक सूचना मिली। पुलिस को बताया गया कि नेहा नाम की लड़की को तौफीक नाम के एक लड़के ने छत की 5वीं मंजिल से नीचे फेंक दिया है। इसके बाद आनन-फानन में घायल नेहा को नजदीकी जीटीबी नगर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी मौत हो गई। लड़की के पिता का आरोप है कि तौफीक बुर्का पहनकर उनके घर में घुसा था। उसने लड़की के पिता को भी धक्का दिया। इस घटना पर लड़की के पिता का कहना है कि नेहा तौफीक को राखी बांधती थी। उनका परिवार करीब 3 साल से तौफीक को जानता है।

लड़की के पिता ने बताया कि नेहा अब तौफीक से बात नहीं करना चाहती थी। फिर भी तौफीक नेहा को लगातार परेशान करता था। वह उसे धमकी भी देता था। परिवार की शिकायत के बाद पुलिस ने तौफीक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है और मामले

की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक, तौफीक मुरादाबाद का रहने वाला है और फिलहाल वह फरार है, जिसकी तलाश पुलिस कर रही है। बता दें कि इस तरह की यह कोई पहली घटना नहीं है। बता दें कि इससे पहले बीते दिनों दिल्ली के पहाड़गंज के एक होटल में हुए सनसनीखेज हत्याकांड ने भी सभी को चौंका कर रखा दिया था।

पीएम मोदी ने मॉरीशस के प्रधानमंत्री से की बात

भारत आने का दिया न्यौता

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. नवीन नवीनचंद्र रामगुलाम से बात की। इस दौरान पीएम मोदी ने भारत-मॉरीशस के विशेष और अनूठे संबंधों पर जोर देते हुए, उन्होंने बढ़ी हुई रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करने के लिए साझा प्रतिबद्धता की पुष्टि की। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय विकास साझेदारी और अन्य क्षेत्रों में सहयोग को और गहरा करने के उपायों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री ने 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में प्रधानमंत्री रामगुलाम की पूरे दिल से भागीदारी की सराहना की। साथ ही उन्होंने विजन महासागर और पड़ोसी पहले नीति के अनुरूप मॉरीशस की विकास प्राथमिकताओं के लिए भारत की प्रतिबद्धता दोहराई। पीएम नरेंद्र मोदी ने इस दौरान विकास साझेदारी, क्षमता निर्माण, रक्षा, समुद्री सुरक्षा, डिजिटल बुनियादी ढांचे और लोगों से लोगों के बीच संबंधों सहित कई

क्षेत्रों में चल रहे सहयोग पर चर्चा की। पीएम मोदी ने मॉरीशस के प्रधानमंत्री रामगुलाम को शीघ्र भारत आने का निमंत्रण दिया। दोनों नेताओं ने संपर्क में बने रहने पर सहमति भी जताई। बता दें कि इससे पहले मॉरीशस के प्रधानमंत्री मार्च 2025 में भारत आए थे। दरअसल वे पीएम नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर मॉरीशस के नेशनल डे (12 मार्च) के मुख्य अतिथि बनने के लिए आए थे। इस दौरान दोनों देशों के बीच आर्थिक, रक्षा, और सांस्कृतिक सहयोग को लेकर कई अहम समझौते भी हुए थे।

मार्च 2025 में मॉरीशस के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण समझौते हुए। इनमें स्थानीय करेंसी (द्बहृक्र/स्रूक्र) में व्यापार को बढ़ावा देने, मॉरीशस को भारत से क्रेडिट सुविधा उपलब्ध कराने, स्वस्थ्य क्षेत्र में सहयोग, विदेश सेवा संस्थानों के बीच साझेदारी, गुड गवर्नेंस और प्रशासनिक सुधार में सहयोग, समुद्री सुरक्षा के लिए व्हाइट शिपिंग इन्फॉर्मेशन साझा करने, समुद्री विज्ञान और डेटा शेयरिंग, साथ ही मॉरीशस में नया संसद भवन बनाने और जल पाइपलाइन प्रोजेक्ट में भारत की मदद जैसे समझौते शामिल हैं। मॉरीशस के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध और मजबूत हुए।

नशे में टल्ली होकर स्कूल पहुंचीं टीचर मैडम, स्टाफ ने की शिकायत

धार (एजेंसी)। जिले में एक शिक्षिका का हैरान कर देने वाला वीडियो सामने आया है। यहां सिंघाना में एक महिला टीचर शराब के नशे में टल्ली होकर स्कूल पहुंच गई। स्कूल में कुछ मजदूर काम कर रहे थे, जिनके साथ महिला टीचर की बहसबाजी का वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। वीडियो में महिला टीचर को नशे में धुत अवस्था में देखा जा सकता है। इस दौरान स्कूल में बच्चे भी मौजूद थे। वहीं महिला टीचर के द्वारा इस प्रकार की हरकत कई बार की जा चुकी है। मना करने पर भी नहीं मानने के बाद अब स्कूल के स्टाफ ने इसकी शिकायत कर दी है। पूरा मामला धार जिले के सिंघाना प्राइमरी स्कूल का बताया जा रहा है। यहां एक महिला टीचर नशे में धुत होकर स्कूल पहुंची। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। ये वीडियो 23 जून का बताया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक ये टीचर कविता कवचे, सिंघाना के प्राइमरी स्कूल में पदस्थ है। यह रोज नशे में स्कूल आती है। कई बार समझाए जाने के बाद भी इनके शराब पीने की आदत में कोई सुधार नहीं हुआ। आरोप है कि यह नशे में स्टाफ से अभद्र व्यवहार करती है।

ग्वालियर के ऐतिहासिक दुर्ग की गोद में मना 11वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

भोपाल (एजेंसी)। ग्वालियर जिले में 11वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का मुख्य आयोजन ग्वालियर के ऐतिहासिक दुर्ग पर स्थित राजा मानसिंह महल के समीप उद्यानिकी, खाद्य प्रसंस्करण, सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ।

मंत्री श्री कुशवाह ने कार्यक्रम में योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इसे जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाने का संदेश दिया। योग कार्यक्रम में बड़ी संख्या में नागरिकों, युवाओं, अधिकारियों, शिक्षकों तथा स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए।

कार्यक्रम के दौरान सामान्य योग प्रोटोकॉल के अनुसार योगाभ्यास कराया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। जिले भर में योग दिवस को व्यापक स्तर पर मनाया गया। सभी नगरीय निकायों, पंचायत मुख्यालयों और ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्थानीय जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में योग कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में भी जनसामान्य ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग में योग सत्र

भोपाल (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून शनिवार को नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने भोपाल के शिवाजी नगर स्थित पालिका भवन कार्यालय परिसर में योग सत्र का आयोजन किया गया।

सामूहिक योग सत्र में विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने योगाभ्यास कर तन, मन और आत्मा की शुद्धि के साथ योग से एकता के संदेश को आत्मसात किया। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के आयुक्त श्री संकेत भोंडवे ने कहा कि सामूहिक योग के आयोजन का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि योग हमारी प्राचीन परंपरा का अभिन्न हिस्सा है, जो व्यक्ति के समग्र विकास में सहायक होता है।

योग सत्र के दौरान अपर आयुक्त श्री कैलाश वानखेड़े, श्री के.एल. मीणा, डॉ परीक्षित झाड़े, प्रमुख अभियंता श्री आनंद सिंह, अपर संचालक श्री अनिल गोंड, अधीक्षण अभियंता श्री जीवन सिंह एवं श्री रवि चतुर्वेदी सहित विभाग के समस्त अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने नियमित रूप से योग को अपने जीवन में शामिल करने का संकल्प लिया और सभी को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया गया।

पूर्व मुख्य सचिव और सहयोगी की लोकायुक्त में जांच शुरू

भोपाल (एजेंसी)। लोकायुक्त भोपाल ने कांग्रेस नेता और पूर्व विधायक पारस सकलेचा की शिकायत के बाद पूर्व मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस तथा आजीविका मिशन के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी ललित मोहन बेलवाल के खिलाफ जांच शुरू की है। पूर्व विधायक पारस सकलेचा ने 28 अगस्त 2023 को लोकायुक्त में शिकायत दर्ज की थी कि बैंस तथा बेलवाल ने पोषण आहार तथा अन्य योजनाओं में वर्ष 2018-19 से 2021-22 के 4 वर्षों में मात्र 8 जिलों में 500 करोड़ का भ्रष्टाचार किया, जिसका उल्लेख ऑडिटर जनरल ने मार्च 2025 में विधानसभा में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में भी किया। सकलेचा का आरोप है कि इकबाल सिंह बैंस ने पंचायत विभाग के अपने कार्यकाल में 2017 में अपने चहेते बेलवाल को वन विभाग से प्रतिनियुक्ति पर लाकर आजीविका मिशन का सीईओ बना दिया था। दोनों ने षड्यंत्रपूर्वक पोषण आहार बनाने वाली सातों फैक्ट्री का कार्य एग्रो इंडस्ट्री कॉरपोरेशन से लेकर आजीविका मिशन को दे दिया। दिसंबर 2018 में कमलनाथ सरकार बनने पर आजीविका मिशन में घोटाले को देखते हुए सातों फैक्ट्री का कार्य पुन: एग्रो इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसरण में पाठ्यक्रम एवं पुस्तक लेखन, निरंतर चलने वाली प्रक्रिया : उच्च शिक्षा मंत्री परमार

भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को लागू करने वाला देश भर में अग्रणी राज्य है। प्रदेश में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में हो रहा द्रुत गति से क्रियान्वयन, देश भर में चर्चा का विषय है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा को लेकर हो रहे तेज गति से क्रियान्वयन से, मप्र उदाहरण के रूप में स्थापित हो रहा है। देश के अन्य राज्यों के लिए, हमारी कार्यशैली अभिप्रेरक बनें, इस आशय के साथ हमें सावधानीपूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसरण में, तीव्र गति के साथ क्रियान्वयन करते हुए आगामी लक्ष्यों के निर्धारण में, मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी का योगदान अनुकरणीय है। यह बात उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने शनिवार को भोपाल स्थित होटल पलाश में, मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के 55वें स्थापना दिवस समारोह में सहभागिता कर कही। श्री परमार ने अकादमी परिवार को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं भी प्रेषित की। उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसरण में पाठ्यक्रम एवं पुस्तक लेखन की प्रक्रिया, निरंतर चलने वाली प्रक्रिया

है। इस लक्ष्य की ओर बढ़ने में, मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी लगातार क्रियाशील है। विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण एवं मितव्ययी पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए, बाजार में भी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की पुस्तकें उपलब्ध कराने की आवश्यकता है; इससे शिक्षा के व्यापारीकरण पर लगाम लग सकेगी। श्री परमार ने अकादमी के लेखकों को लेखन में सावधानी बरतते हुए, व्यापक लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढ़ने की बात कही।

मंत्री श्री परमार ने मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के ब्रॉशर - विकास गाथा एवं संस्थान की द्विमासिक पत्रिका रचना के नवीन अंक का विमोचन किया। उन्होंने अकादमी के संयुक्त संचालक डॉ उत्तम सिंह चौहान द्वारा रचित पुस्तक समाज विज्ञान का दार्शनिक आधार (आधुनिक एवं भारतीय परंपरागत परिप्रेक्ष्य) एवं लेखिका श्रीमती वंदना त्रिपाठी के काव्य संग्रह दिल से निकले कविता हो गए का भी विमोचन किया।

अकादमी के संचालक श्री अशोक कड़ेल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू करने में, हमारा प्रदेश अग्रणी राज्य है। श्री कड़ेल ने हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की यात्रा और उच्च शिक्षा में योगदान पर सारगर्भित प्रकाश डाला। श्री कड़ेल ने अकादमी के अधिकारी एवं कर्मचारियों को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं भी दी।

समारोह में मप्र निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग के चेयरमैन डॉ भरत शरण सिंह, अटल बिहारी हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल के कुलगुरु प्रो खेमसिंह डहेरिया एवं अकादमी के पूर्व संचालक श्री देवेंद्र दीपक सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलगुरु, विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों के निदेशक, प्राध्यापक, लेखक, शिक्षाविद् एवं उच्च शिक्षा विभाग के अधिकारियों सहित अकादमी के अधिकारी - कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अकादमी के सहायक संचालक श्री राम विश्वास कुशवाह ने किया एवं संयुक्त संचालक डॉ उत्तम सिंह चौहान ने आभार व्यक्त किया।

पुराने जल स्रोतों को संवारना और पौधे लगाना जरूरी तभी आगामी पीढ़ी के लिए होगा पर्याप्त जल -मंत्री पटेल

भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास, श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल शनिवार को विदिशा जिले की लटेरी तहसील के गोपीतलई में जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने सिंध एवं सगड़ नदी के उद्गम स्थल पर पूजन अर्चना कर कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन व माल्यार्पण के साथ किया।

मंत्री श्री पटेल ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने ने जल स्रोतों को संवारने व उनके जीर्णोद्धार और पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से इस वर्ष जल गंगा संवर्धन अभियान की क्रियान्वयन अवधि 3 माह तक संचालित की है जो जल संरक्षण की दिशा में प्रशंसनीय

है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि इस वर्ष मैने प्रदेश के कुल 79 उद्गम स्थलों का निरीक्षण किया है। जल स्रोतों को संवारने व पानी की उपलब्धता आगामी पीढ़ी को सुनिश्चित हो उसके लिए आज हमें जागरूक होने की आवश्यकता है। उन्होंने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के माध्यम से पुराने जल स्रोतों को संवारने, पुनर्जीवन और नए निर्माण कार्य कराए जा रहे हैं, जिससे आगामी पीढ़ी को पर्याप्त मात्रा में जल की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। मंत्री ने कहा कि जल स्रोतों की चिंता करनी होगी साथ-साथ उन्हें जिंदा रखना हमारी जिम्मेदारी होगी।

योग तन और मन के लिए संजीवनी है, योग अवश्य करें : मंत्री राजपूत

भोपाल (एजेंसी)। योग शरीर और मन के लिए संजीवनी है, योग अवश्य करें। व्यक्ति स्वस्थ रहेगा तो परिवार, समाज और देश स्वस्थ रहेगा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के साथ ही विदेश में भी योग का परचम लहराया है। यह बात खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने सागर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर पीटीसी ग्राउंड पर आयोजित कार्यक्रम में कही। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि 25 से 30 मिनट योग कर ले तो शरीर प्रफुल्लित हो जाता है। दिन रात की भाग दौड़ के बीच हमें 30 मिनट योग अवश्य करना चाहिए। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि योग के लिए कोई संसाधन की आवश्यकता नहीं

होती एक चादर पर योग किया जा सकता है ।

सांसद श्रीमती लता वानखेड़े ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए योग अति आवश्यक है। योग करें स्वस्थ रहें, योग से न केवल मन शरीर स्वस्थ होता है बल्कि मस्तिष्क भी स्वस्थ रहता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश में योग के प्रति जो कार्य किया है इसे पूरा विश्व योग के प्रति जागरूक हुआ है।

विधायक श्री शैलेंद्र जैन ने कहा कि सागर को गौर नगरी के साथ योग नगरी बनाने के लिए हमें आज संकल्प लेना होगा। जब हम सभी योग करेंगे तो हमारा सागर स्वस्थ सागर बनेगा। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, छात्र-छात्राएं और नागरिक मौजूद थे।

योगाभ्यास को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं -ऊर्जा मंत्री तोमर

भोपाल। 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शनिवार को जिला स्तरीय सामूहिक योग कार्यक्रम योग संगम मानस भवन, शिवपुरी में किया गया। यह आयोजन एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग थीम पर सम्पन्न हुआ। ऊर्जा मंत्री एवं शिवपुरी जिले के प्रभारी मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने भी योग किया। उन्होंने दैनिक योग अभ्यास को जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। श्री तोमर ने कहा कि हमें नियमित रूप से योग का अभ्यास करना चाहिए। हमें अपने लिए और अपनों के लिए योग करना चाहिए। जब हम स्वस्थ्य रहेंगे तो आने वाली पीढ़ियां भी स्वस्थ्य रहेंगी, उन तक स्वच्छता का संदेश पहुंचाने का योग एक अच्छा माध्यम है।

कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्रव्यापी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रदेश स्तरीय योग कार्यक्रमों का प्रसारण एलईडी स्क्रीन

के माध्यम से किया गया। सामूहिक योग अभ्यास में ताड़ासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, अर्धचक्रासन, त्रिकोणासन, वज्रासन, शशांकासन, भुजंगासन, शवासन सहित विभिन्न योगासन और प्राणायाम, कृकपालभाति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी आदि का अभ्यास कराया गया। इस दौरान क्षेत्रीय विधायक, जनप्रतिनिधि और नागरिकों ने भी योग किया ।

समूचा विश्व योग को दे रहा है महत्व - मंत्री श्री पटेल

भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल शनिवार को 11 वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक योगाभ्यास योग संगम कार्यक्रम में नरसिंहपुर जिले के नर्मदा नदी बरमान तट पर स्थित दीपेश्वर मंदिर प्रांगण शामिल हुए। यह कार्यक्रम आयुष विभाग और शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। उल्लेखनीय हैं कि इस वर्ष योग दिवस एक पृथ्वी- एक स्वास्थ्य के लिये योग की थीम पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मंत्री श्री पटेल ने नागरिकों को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज समूचा विश्व योग के महत्व को समझ रहा है। इसका श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को जाता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रयासों का ही परिणाम है कि विश्व योग को आत्मसात कर रहा है। अब यह केवल शासकीय कार्यक्रम तक सीमित नहीं है। उन्होंने नागरिकों से योग को दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा बनाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशाखापट्टनम (आंध्रप्रदेश) में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का सीधा प्रसारण किया गया।

लोक निर्माण विभाग द्वारा 1 जुलाई को, एक लाख पौधों का किया जाएगा रोपण

भोपाल (एजेंसी)। लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह के निर्देश पर लोक निर्माण विभाग में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुधार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विभाग द्वारा औचक निरीक्षण की कार्ययोजना तैयार की गई है। इस योजना के अंतर्गत हर माह दो दिन रेंडमली चयनित कार्यों का औचक निरीक्षण कर उनकी गुणवत्ता का परीक्षण किया जाएगा।

इसी क्रम में मुख्य अभियंताओं के सात दलों द्वारा बैतूल, बालाघाट, श्योपुर, बुरहानपुर, अनूपपुर, मंदसौर एवं दमोह जिलों में 35 कार्यों का निरीक्षण किया गया। इनमें 14 कार्य लोक निर्माण विभाग (सड़क/पुल), 11 कार्य

पी.आई.यू. (भवन), 06 कार्य म.प्र. सड़क विकास निगम, 03 कार्य म.प्र. भवन विकास निगम एवं 01 कार्य एन.एच. का सम्मिलित रहा।

मंत्री श्री राकेश सिंह की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से निरीक्षण दलों से प्राप्त प्रतिवेदनों की समीक्षा बैठक हुई। बैठक में प्रमुख अभियंता (बी एण्ड आर) श्री के.पी.एस. राणा, प्रमुख अभियंता (भवन) श्री एस.आर. बघेल, प्रमुख अभियंता (भवन विकास निगम) श्री अनिल श्रीवास्तव, तकनीकी सलाहकार श्री आर.के. मेहरा, उपसचिव श्री ए.आर. सिंह सहित समस्त मुख्य अभियंता, अधीक्षण यंत्री, कार्यपालन यंत्री एवं निरीक्षणकर्ता अधिकारी उपस्थित रहे।

समीक्षा में बालाघाट जिले के कुटुंब न्यायालय भवन कार्य को बहुत अच्छा पाया गया, जिसके लिए कार्यपालन यंत्री श्री उदल सिंह उईके, अनुविभागीय अधिकारी श्री आनंद राव बनसोर एवं उपयंत्री श्रीमती ममता धुर्वे की सराहना की गई। श्योपुर जिले में करहल-सरई-बरगवां मार्ग के कार्य को उत्कृष्ट पाए जाने पर कार्यपालन यंत्री श्री विष्णु अग्रवाल, अनुविभागीय अधिकारी सुश्री अंजली प्रजापति एवं उपयंत्री श्री एम.सी. दंडोतिया की प्रशंसा की गई।

शासकीय कैलाशनाथ काटजू अस्पताल में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर 'योग संगम - 2025' का भव्य आयोजन

भोपाल। भोपाल के शासकीय कैलाशनाथ काटजू अस्पताल में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में समस्त चिकित्सालय कर्मियों द्वारा योग संगम 2025 अंतर्गत माननीय श्री प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित योग समागम का लाइव प्रसारण देखा। तत्पश्चात कार्यक्रम की शुरुआत जुम्बा डांस से हुई, जिसके बाद योग, ध्यान और विभिन्न व्यायाम सत्रों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को भोपाल के सर्वश्रेष्ठ फिटनेस सेंटर फिटब्लिस भोपाल की

संचालक डॉ. श्रुति कपूर एवं उनके साथ आये योगाचार्य एवं जुम्बा ट्रेनर्स द्वारा संचालित किया गया। इस अवसर पर अस्पताल की नोडल अधिकारी डॉ. रचना दुबे ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि योग हमारे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य को संतुलित रखने का एक प्राचीन और प्रभावशाली माध्यम है। यह न केवल शरीर को लचीला और मजबूत बनाता है, बल्कि मानसिक तनाव को भी दूर करता है।

योग दिवस कार्यक्रम में नोडल अधिकारी डॉ. रचना दुबे, अधीक्षक डॉ. बलराम उपाध्याय, विशेषज्ञों, चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ, पैरामेडिकल स्टाफ, कार्यालय स्टाफ, सुरक्षाकर्मी, सफाईकर्मी सहित लगभग 300 से अधिक लोगों ने सबेरे की ताज़गी में ऊर्जा और उत्साह के साथ भागीदारी निभाई। स्वास्थ्य और सौहार्द्र से भरपूर इस मिलन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। इस अनोखे संगम ने तन, मन और समाज को स्वस्थ रहने का संदेश दिया। इसी के साथ चिकित्सालय के स्टाफ द्वारा योग फॉर वन हेल्थ वन अर्थ विषय पर आधारित पोस्टर्स निर्मित किये गए।

मास्टर ट्रेनर्स गंभीरता और जिम्मेदारी के साथ प्रशिक्षण प्राप्त करें-मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री सिंह

भोपाल (एजेंसी)। भारत निर्वाचन आयोग के राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्गत आरसीव्हीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी भोपाल में शनिवार को राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय और विधानसभा स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षण दिया गया। मास्टर टेनर्स को निर्वाचक नामावली सहित आयोग की विभिन्न गतिविधियों के बारे में प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण सुबह 10 से शाम 6 बजे तक चला। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश श्री सुखवीर सिंह ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री सिंह ने कहा कि सभी मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण को गंभीरता और जिम्मेदारी लें। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यहां से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रदेश के सभी बीएलओ को प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की सुचिता के लिए मतदाता सूची एक बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी है। मतदाता सूची पूरी तरह से शुद्ध हो, इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। बीएलओ भारत निर्वाचन आयोग का सबसे निचले स्तर पर एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। प्रशिक्षण के दौरान मास्टर ट्रेनर्स को विधिक प्रावधान एवं निर्वाचक नामावली प्रक्रिया, रोल प्ले, केस स्टडीज, बीएलओ ऐप एवं फॉर्म भरने के अभ्यास का आंकलन तथा शंकाओं का समाधान किया गया। आरसीव्हीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मास्टर ट्रेनर्स का मूल्यांकन किया गया। इसके लिए आईआईआईडीईएम से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके 10 जिलों के निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई थी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजेश कुमार कौल, संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री रामप्रताप सिंह जादौन, उप मुख्य निवार्चन पदाधिकारी श्रीमती सुरभि तिवारी, उप मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजेश यादव, राष्ट्रीय स्तर के मास्टर ट्रेनर श्री प्रवास जैन, श्री वाईपी सिंह उपस्थित रहे।

मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों से दिया गया योग का संदेश

भोपाल। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में पर्यटन विभाग ने प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर सामूहिक योग कर योग का संदेश दिया। इन सभी स्थलों पर योग संगम का आयोजन किया गया। योग के वैश्विक महत्व को बढ़ावा देने और नागरिकों को स्वस्थ जीवन-शैली अपनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से आयोजित योग संगम में बड़ी संख्या मेंजन-प्रतिनिधियों, अधिकारियोंङ्कर्मचारियों, स्कूली विद्यार्थियों और नागरिकों ने हिस्सा लेकर योग साधना की। प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि भारत सरकार द्वारा निर्धारित इस वर्ष की थीम %एक पृथ्वी एवं एक स्वास्थ्य के लिये योग% है, जो योग के समग्र लाभों और वैश्विक कल्याण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हमारा प्रयास है कि इन कार्यक्रमों के माध्यम से न केवल योग के महत्व को उजागर किया जाए, बल्कि मध्यप्रदेश को एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में भी बढ़ावा दिया जाए।प्रमुख पर्यटन स्थलों पर हुए सामूहिक योग कार्यक्रम

नवीन जल संरचनाओं में होगा मछली पालन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले भर में पुराने जल स्रोतों में सुधार के साथ नवीन जल संरचनाओं का निर्माण किया गया है। नवीन जल संरचनाओं में परंपरागत मछली पालकों तथा स्वसहायता समूहों को मछलीपालन का अवसर दिया जा रहा है। उप संचालक मछलीपालन डॉ अंजना सिंह ने जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों से अनुरोध करते हुए कहा है जल गंगा संवर्धन अभियान में निर्मित तालाबों तथा उसमें मछलीपालन के लिए इच्छुक हितग्राहियों की सूची सहायक संचालक मछलीपालन कार्यालय को उपलब्ध कराएं जिससे मछलीपालकों को प्रशिक्षण देकर मछलीपालन का अवसर दिया जा सके।

वर्षा ऋतु में होने वाली बीमारियों से बचने की सलाह, दूषित जल का नहीं करें प्रयोग

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला ने वर्षा ऋतु में मुख्य रूप से दूषित जल के उपयोग से होने वाली बीमारियों से बचने की सलाह दी है। उन्होंने कहा है कि जिले में प्री मानसून वर्षा शुरू हो गई है। शीघ्र ही वर्षाकाल शुरू हो जाएगा। वर्षाकाल में दूषित जल के सेवन से टाइफाइड, पीलिया, डायरिया, पेचिस एवं हैजा जैसी बीमारियां फैलती हैं। अतः भोजन बनाने एवं पेयजल के उपयोग में शुद्ध उबला हुआ जल का उपयोग करें। कुछ भी खाने के पहले व शौच के पश्चात साबुन से अवश्य हाथ धोयें। शुद्ध पेयजल की कमी के कारण देश में जलजनित रोगों से सबसे अधिक यानि लगभग 80 प्रतिशत मौतें होती हैं। पानी और अस्वच्छ आदतों से फैलने वाली

बीमारियों में मोटे तौर पर दस्त, कृमि संक्रमण, त्वचा और आंखों के रोग, मच्छरों एवं मक्खियों से फैलने वाले रोग सम्मिलित हैं। बच्चों में दूषित पानी और खाद्य पदार्थों के कारण उल्टी-दस्त का प्रकोप अधिक गंभीर रूप धारण कर सकता है। सड़े-गले फल एवं खाद्य पदार्थो का उपयोग न करें। खुले में शौच न करें एवं शौचालय का उपयोग करें। घर के आसपास साफ-सफाई रखें, दस्त लग जाने पर ओ.आर.एस. एवं जिंक सल्फेट गोली का उपयोग चिकित्सक की सलाह अनुसार करें। खाने-पीने की वस्तुओं को ढंककर रखें, मक्खियों से बचाव करें। हरी सब्जी एवं फलों को साफ पानी से धोकर ही उपयोग करें। मानसून के दौरान बहुत से लोगों को आंखो के रोग हो जाते हैं। इस रोग को आई-फ्लू, कंजक्टिवाईटिस या आखें आना के रूप में जाना जाता है। इस रोग से बचाव के लिए बार-बार अपने हाथ एवं चेहरे को ठंडे पानी से धोयें, परिवार के सभी सदस्य अलग-अलग तौलिये एवं रूमाल का उपयोग करें, स्वच्छ पानी का उपयोग करें, बार-बार आंखों को हाथ न लगायें, धूप के चश्मे का प्रयोग करें, चिकित्सक को दिखायें।

बरसात में मलेरिया और डेगू रोग भी फैलता है जिसमें मरीज को ठण्ड लगकर बुखार आता है। प्रायः खेत, तालाब, गड्ढे, खाई, घर के आसपास रखे हुए टूटे-फूटे डब्बे, पुराने टायर, पशु के पानी पीने का नाद इत्यादि में बरसात के दिनो में जल जमा हो जाता है। जिसमें मच्छर के लार्वा पैदा होते हैं जो बाद में मच्छर बनकर रोग फैलाते हैं। मलेरिया से बचाव हेतु घर के आसपास जल जमा न होने दें, रूके हुए पानी में मिट्टी का तेल या जला हुआ ऑईल डालें। कूलर, फूलदान, फ्रिज ट्रे आदि को सप्ताह में एक बार अवश्य साफ करें। सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करें। कीटनाशक का छिडकाव करवायें, मलेरिया रोग हो जाने पर खून की जांच अवश्य करायें एवं चिकित्सक की सलाह से पूर्ण उपचार लें।

उपयंत्री आशुतोष तिवारी का मैहर स्थानांतरण, दी गई विदाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। त्योंथर नगर परिषद में पदस्थ उपयंत्री आशुतोष तिवारी का मैहर स्थानांतरण हो गया है। इस अवसर पर नगर परिषद कार्यालय में विदाई समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें नगर परिषद अध्यक्ष कृष्णावती शुक्ला, सांसद प्रतिनिधि सुशीलचंद्र शुक्ला "बच्चा", सीएमओ अजय पांडे सहित कई लोग शामिल हुए।

उपस्थित लोगों ने बताया कि उपयंत्री आशुतोष तिवारी अत्यंत व्यवहारिक, कुशल, सरल और सौम्य थे। नगर परिषद कार्यालय में आने वाले हितग्राहियों और नागरिकों के कार्यों को वह मुस्कराहट के साथ पूरा करते और आशीर्वाद देते थे। आशुतोष तिवारी ने अमरपाटन नगर परिषद के बाद त्योंथर में लगभग चार वर्षों तक उपयंत्री के रूप में सेवा दी।

उन्होंने उस दौर को भी देखा जब महाकुंभ में गंगा स्नान के लिए हजारों लोग विभिन्न प्रदेशों से आते थे और भीड़ के कारण चाकघाट से सोहागी तक वाहन रुक जाते थे। उस समय आशुतोष तिवारी ने दरियादिली दिखाते हुए कई श्रद्धालुओं को भोजन करवाया था।

आशुतोष तिवारी ने कहा कि जब उनका स्थानांतरण अमरपाटन से त्योंथर हुआ था, तब एक डर और चुनौती थी, लेकिन त्योंथर में लोगों का प्यार, कर्मचारियों का व्यवहार और स्नेह मिलने से उन्हें घर जैसा माहौल महसूस हुआ। अब मैहर जाते समय त्योंथर के लोगों, कर्मचारियों और जनप्रतिनिधियों का स्नेह हमेशा याद रहेगा। विदाई समारोह में वरिष्ठ समाजसेवी विद्यासागर शुक्ला, पार्षद विनोद शुक्ला, लेखपाल अतुल पांडे, शिवम, भोले शुक्ला, रामजी, अशोक सहित नगर परिषद के कर्मचारी और स्थानीय लोग मौजूद रहे।

शहरी परियोजना में होगी रिक्त पदों पर भर्ती

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग की रीवा शहरी परियोजना में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के एक पद तथा आंगनवाड़ी सहायिका के 10 पदों पर भर्ती की कार्यवाही की जा रही है। इस संबंध में परियोजना अधिकारी ने बताया कि रिक्त पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन सात जुलाई तक एमपी ऑनलाइन के पोर्टल चयन डॉट एमपी ऑनलाइन डॉट जीओभी डॉट इन में सात जुलाई तक आवेदन किया जा सकता है। आवेदन केवल ऑनलाइन ही मान्य होंगे। आवेदन पत्र के साथ अन्य दस्तावेज स्कैन करके आवेदन के साथ अपलोड करने होंगे। रीवा शहरी

क्षेत्र में वार्ड क्रमांक 29 में आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक दो में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा सहायिका की भर्ती की जा रही है। वार्ड क्रमांक 42 में आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक दो एवं चार, वार्ड क्रमांक 29 में आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक दो और पाँच, वार्ड क्रमांक 38 में आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक एक, वार्ड क्रमांक 16 में आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक क्रमांक एक, वार्ड क्रमांक छह में आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक एक में, वार्ड क्रमांक 44 में आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक तीन, वार्ड क्रमांक 13 में आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक दो में आंगनवाड़ी सहायिका के पदों पर भर्ती की जा रही है। इनके लिए उसी वार्ड की निवासी पात्र महिला आवेदन कर सकती हैं जहाँ भर्ती की जानी है।

कमिश्नर ने जिला शिक्षा अधिकारी और योजना अधिकारी शिक्षा को किया निलंबित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर बीएस जामोद ने शिक्षा विभाग के दो अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने के आदेश दिए हैं। कमिश्नर ने जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता और योजना अधिकारी शिक्षा (उच्च पद प्रभार प्राचार्य हाईस्कूल) अखिलेश मिश्रा को निलंबित करने के आदेश दिए हैं। जारी अलग-अलग आदेशों के अनुसार अनुकंपा नियुक्ति के 37 प्रकरणों की जाँच कराए जाने पर पाँच प्रकरणों में कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर अनुकंपा नियुक्ति प्रदान करने पर यह

कार्यवाही की गई है। इस संबंध में कलेक्टर रीवा द्वारा दिए गए प्रस्ताव के आधार पर मध्यप्रदेश सिविल सेवा वर्गीकरण नियंत्रण एवं अपील नियम 1966 के तहत निलंबन की कार्यवाही की गई है। अनुकंपा नियुक्ति के संबंध में गंभीर अनियमितता पाए जाने पर दोनों अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस दिया गया। नोटिस का संतोषजनक उत्तर प्राप्त न होने पर निलंबन की कार्यवाही की गई है। निलंबन अवधि में गुप्ता तथा मिश्रा का मुख्यालय संयुक्त संचालक लोक शिक्षण कार्यालय रीवा निर्धारित किया गया है। दोनों अधिकारियों को नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ता देय होगा।

सामाजिक परिवर्तन की राजनीति पर विचार संगोष्ठी का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय बी.पी. सिंह के जन्मदिन एवं इमर्जेंसी की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 25 जून को मानस भवन में अपराह्न 3 बजे से एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। गोष्ठी का विषय "सामाजिक परिवर्तन की राजनीति" है।

समाजवादी जन मोर्चा के संयोजक मीसा बंदी महेश्वरी त्रिपाठी ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि गोष्ठी में प्रमुख वक्ताओं के रूप में पूर्व विधायक तोषण सिंह, पूर्व विधायक राम लखन शर्मा, वरिष्ठ अधिवक्ता घनश्याम सिंह, अधिवक्ता संघ के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह, प्रो. दिनेश कुशवाहा, कामरेड सुंदर सिंह, विष्णु बहादुर सिंह (सीधी), समाजवादी नेता एवं मीसा बंदी कौशल सिंह, मीसा बंदी बृहस्पति सिंह, अजय खरे, रामेश्वर सोनी, कामरेड गिरजेश सिंह और धीरेश सिंह अपने विचार व्यक्त करेंगे। इस अवसर पर मीसा बंदियों (लोकतंत्र सेनानी) का सम्मान भी किया जाएगा।आयोजक महेश्वरी त्रिपाठी ने सभी प्रबुद्धजनों से कार्यक्रम में उपस्थित होने की अपील की है।

अहंकार रूपी कंस को ह्रदय से बाहर रखें तो खुलेंगे चौतरफा तरक्की के द्वारा : आचार्य विशुद्धानंद जी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अहंकार रूपी कंस को सर्वदा ह्रदय से बाहर रखेंगे तो खूब तरक्की होगी जीवन सुखमय होगा। मन से अहंकार को दूर रखने पर ही आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन होता है। यदि मनुष्य अपना अहंकार दूर कर ले तो निश्चित तौर पर वह मोक्ष स–ति को प्राप्त कर सकता है ,उक्त ज्ञानमयी मन्दाकिनी रीवा जिले के त्योंथर तहसील के मां मादा नदी के किनारे स्थित तुर्कागोदर हनुमान मंदिर परिसर में चल रही श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ संगीतमय अमृत रस प्रवाह भागवत कथा महापुराण कथा के कथा वाचक महाराज की अमृतमयी श्रीमुख वाणी से प्रवाहित हुई ,व्यास श्री ब्रह्मचारी विशुद्धानंदजी महाराज जी ने कथा के दौरान कंस वध की कथा श्रवण कराते हुए उपस्थित भक्तगणों को यह अमूल्य पुण्य ज्ञानार्जन कराया । श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण करने के लिए गृह गांव सहित आस पड़ोस के सभी गांव के श्रद्धालु जन भारी मात्रा में कथा पंडाल में प्रतिदिन उपस्थित होकर पावन श्रीमद् भागवत कथा रस का

पान कर जहाँ एक तरफ मानव जीवन को धन्य बना रहे वहीं दूसरी तरफ पवित्र पुण्यार्जन भी कर रहे हैं।

इन भागवत आचार्य की रहती है उपस्थित : श्री कृष्ण कुमार द्विवेदी जी,श्री सर्वज्ञभूषण मिश्र जी ,श्री अप्रमेय प्रपन्नाचार्य जी, एवं श्री रोहित कुमार तिवारी जी(भागवत रसिक)श्री सर्वेश प्रपन्नाचार्य जी महाराज एवं श्री अंजनी शरण सावर्णी जी महाराजडा. श्री बृजेश नाथ ओझा जी महाराज, श्री योगेन्द्र प्रसाद मिश्र जी महाराजश्री शिवानंद ब्रह्मचारी जी महाराज श्री अच्युत प्रपन्नाचार्य जी महाराज।

इन कार्यकर्ताओं के विशेष योगदान से चल रहा है संतो का समागमः उपेंद्रानंद ओझा,मयंक द्विवेदी, दया शंकर, सौरभ तिवारी, सौरभ मिश्र, हनुमान द्विवेदी , बिपिन तिवारी, मनोज सिंह, राजेश सिंह पटेल,विनोद पांडे(सरपंच प्रतिनिधि बौना कोठार)सूरज पांडे, अरविंद सिंह, राजमणि सिंह, गुलाब सिंह, राजेश सिंह, सत्यम साउंड,वाले सही करने का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

वाहन से दुर्घटना में मौत होने पर आश्रित को मिलेंगे दो लाख रुपए

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में विभिन्न कारणों से बड़ी संख्या में सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं। इन दुर्घटनाओं में कई व्यक्ति अपनी जान गवां देते हैं। गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों का भी जीवन कठिन हो जाता है। अब तक अज्ञात वाहन से दुर्घटना होने पर मृतक के आश्रितों को सोलेशियम फण्ड से 25 हजार रुपए की आर्थिक सहायता दी जाती थी। इसके स्थान पर हिट एण्ड रन मोटरयान दुर्घटना पीड़ित प्रतिकर योजना 2022 लागू की गई है। इस योजना से अज्ञात वाहन से दुर्घटना में मौत होने पर मृतक के आश्रितों को दो लाख रुपए की सहायता राशि दी जाएगी। गंभीर रूप से घायल होने पर 50 हजार रुपए की सहायता राशि का प्रावधान है। योजना की मानीटरिंग के लिए जिला स्तर पर कलेक्टर की अध्यक्षता में समिति का गठन किया गया है। इसमें पुलिस अधीक्षक, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी को सदस्य बनाया गया है। कलेक्टर इस समिति में एक स्वयंसेवी सदस्य को नामांकित करेंगे। बीमा कंपनी के अधिकारी को समिति का सदस्य सचिव बनाया गया है। अज्ञात वाहन से दुर्घटना होने पर पीड़ित व्यक्ति तहसीलदार अथवा एसडीएम को निर्धारित प्रपत्र में सहायता राशि के लिए आवेदन प्रस्तुत करेंगे। आवेदन पत्र के साथ दावाकर्ता के बैंक खाते की छायाप्रति, अस्पताल में उपचार कराने के बिल, घायल अथवा मृतक की पहचान तथा पता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक अभिलेख प्रस्तुत करना आवश्यक है। इसके साथ-साथ पुलिस में दर्ज एफआईआर की प्रति, दावा करने वाले की पहचान सुनिश्चित करने के लिए प्रमाण पत्र, मौत की स्थिति में पोस्टमार्टम रिपोर्ट एवं मृत्यु प्रमाण पत्र एवं गंभीर चोट होने पर एमएलसी रिपोर्ट देना आवश्यक होगा। इसका आवेदन करने पर संबंधित जाँच दावा अधिकारी तहसीलदार अथवा एसडीएम 30 दिवस में अपनी जाँच रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। कलेक्टर इस रिपोर्ट पर 15 दिवस में आवश्यक कार्यवाही कर पीड़ित को सहायता राशि का भुगतान कराएंगे तथा परिवहन आयुक्त को रिपोर्ट प्रेषित करेंगे।

महिला बाल विकास परियोजना, जिला सतना और मैहर के आधार केंद्र का आवंटन चढ़ा भ्रष्टाचार की भेंट

मीडिया ऑडीटर, सतना/मैहर (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग, परियोजना मैहर में आधार पंजीयन के संचालन हेतु नियुक्ति प्रक्रिया पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगे हैं। हाल ही में प्रस्तुत एक आपत्ति पत्र के अनुसार, परियोजना क्रमांक-01 में एक ऑपरेटर द्वारा फर्जी अनुभव एवं निवास प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर पद प्राप्त कर लिया गया।

आपत्ति पत्र में उल्लेख किया गया है कि चयनित ऑपरेटर अनूप सिंह ने अनुभव प्रमाण पत्र के रूप में 1 से 3 वर्ष का अनुभव दर्शाया है, जबकि महिला एवं बाल विकास परियोजना, मैहर के कार्यालय में उसने कभी कार्य ही नहीं किया। ऐसे में यह अनुभव प्रमाण पत्र पूर्णतः फर्जी बताया गया है।

प्रकरण में आपत्तिकर्ता ने अपना नाम गुप्त रखने की शर्त पर बताया उसने कलेक्टर महोदया जिला मैहर एवं अपर कलेक्टर महोदय व महिला बाल विकास परियोजना अधिकारी मैहर को दिए आवेदन में मांग की है कि अनूप सिंह द्वारा प्रस्तुत अनुभव एवं निवास प्रमाण पत्र एवं महिला बाल विकास परियोजना द्वारा आवंटित ऑपरेटर आईडी की निष्पक्ष जांच करवाई जाए। साथ ही दोष सिद्ध होने पर अनूप सिंह को ऑपरेटर/सुपरवाइजर पद से तत्काल वंचित किया जाए और पात्र अभ्यर्थी को यह कार्य सौंपा जाए।

इस मामले ने न केवल महिला एवं बाल विकास विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि पारदर्शिता और निष्पक्षता के दावों की पोल भी खोल दी है। यदि समय रहते इस प्रकरण की निष्पक्ष जांच नहीं हुई, तो योग्य उम्मीदवारों का हक मारा जाएगा और विभाग की छवि पर भी आंच आएगी।

जांच की मांग तेजः अब क्षेत्रीय सामाजिक संगठनों और स्थानीय नागरिकों ने भी इस मामले की निष्पक्ष जांच और दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। विभागीय अधिकारियों से जवाबदेही तय करने की अपेक्षा की जा रही है।

कमल, शरद और नीरज ने किया ब्लड डोनेट

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सिन्धु विकास समिति द्वारा लगातार चलाए जा रहे रक्तदान अभियान में जुड़कर निरंतर युवा एवं मातृशक्ति रक्तदान कर रहे हैं उसी कड़ी में 23 जून को जिला एवं बिरला अस्पताल में भर्ती जरूरत मंदों को कमल आर्तनी,नीरज चोपड़ा एवं शरद वाधवानी जी ने रक्त की सेवा देकर मानव धर्म निभाया। समिति संस्थाध्यक्ष विनोद गेलानी के कुशल मार्गदर्शन में पिछले कई वर्षों से रक्तदान जीवनदान की अलख ज्योति जलाकर इंसानियत का धर्म निभाते हुए मानवता की सेवा कर रही है एवं अभी तक 6633 यूनिट रक्तदान एवं 36 यूनिट प्लेटलेट्स करवाने का एक रिकॉर्ड भी कायम किया है। रक्तदान करवाने मे डॉ. आलोक जी मनीष सदानी एवं आकाश बनर्जी,का उल्लेखनीय योगदान रहा।

चिरहुला ब्लॉक में संविधान सत्याग्रह चौपाल का आयोजन, बाबा साहब की मूर्ति स्थापना का संकल्प

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के निर्देशानुसार प्रदेश स्तरीय 'संविधान सत्याग्रह' 23 जून 2024 से मध्य प्रदेश में शुरू हो चुका है, जो 25 जून 2025 तक चलेगा। इसी क्रम में 23 जून 2025 को जिला शहर कांग्रेस कमेटी के मार्गदर्शन में रीवा विधानसभा के चिरहुला ब्लॉक, वार्ड नं. 39, रानी तालाब स्थित दलित बस्ती में चौपाल और परिचर्चा का आयोजन किया गया।

चौपाल के दौरान बस्तीवासियों से चर्चा में कहा गया कि भाजपा सरकार में असमानता चरम पर है। देश में अमीर और अमीर हो रहा है, जबकि गरीब और गरीब। इसका कारण चंद पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए मध्यमवर्गीय परिवारों और गरीबों से मनमाने टैक्स वसूल कर पूंजीपतियों को देना है। भाजपा शासन में दलितों और आदिवासियों के खिलाफ आए दिन घटनाएं हो रही हैं, जिन्हें रोकने में सरकार नाकाम है। बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संविधान में दलितों और आदिवासियों को समानता का अधिकार दिया, लेकिन भाजपा सरकार उनकी उपेक्षा कर रही है। हाल ही में ग्वालियर हाईकोर्ट खंडपीठ परिसर में बाबा साहब की मूर्ति स्थापना के मुद्दे पर भाजपा मौन है।

कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष रामकीर्ति शर्मा ने चौपाल में संकल्प दिलाया कि ग्वालियर हाईकोर्ट खंडपीठ में संविधान निर्माता डॉ. अंबेडकर की मूर्ति हर हाल में स्थापित होनी चाहिए। उन्होंने हाईकोर्ट के सभी जजों से मांग की कि ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में मूर्ति लगाई जाए।

कार्यक्रम में चिरहुला ब्लॉक अध्यक्ष रामकीर्ति शर्मा, ढेकहा ब्लॉक अध्यक्ष अखिलेश द्विवेदी, बोदाबाग अध्यक्ष शिवेंद्र प्रताप सिंह बघेल, शहर संगठन मंत्री सज्जन पटेल, पार्षद आरती बक्सरिया, पूर्व पार्षद गुले अहमद, सेक्टर अध्यक्ष अनवर अंसारी, नूर अफजल, श्रीकांत कक्का, गुलाम हुसैन, शबनम बेगम, प्रीति बक्सरिया, सीमा बक्सी, प्रियंका महोतिया, सोनम महोतिया, हेमा बक्सरिया, पुष्पेंद्र कुमार, दीपक वर्मा, दिनेश कोल, अरविंद रावत, चंदन वर्मा सहित अन्य वार्डवासी उपस्थित रहे।

जिला और विकासखण्ड स्तर पर श्रेष्ठ किसानों को मिलेगा पुरस्कार

कृषि विभाग के तहत संचालित सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन आत्मा परियोजना के तहत वर्ष 2024-25 के लिए श्रेष्ठ कार्य करने वाले किसानों को जिला स्तर पर एक और विकासखण्ड स्तर पर पाँच पुरस्कार दिए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक यूपी बागरी ने बताया कि कृषि, उद्यानिकी, मछलीपालन, पशुपालन, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्राकृतिक खेती के लिए नवाचार करने वाले तथा अच्छे प्रयास करने वाले किसानों को पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार के लिए निर्धारित प्रपत्र में आवश्यक विवरण के साथ आवेदन 15 अगस्त तक उप संचालक कृषि कार्यालय में दर्ज करना आवश्यक है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जाएगा। पुरस्कारों का चयन शासन द्वारा निर्धारित समिति द्वारा आवेदन पत्रों का मूल्यांकन करने के बाद किया जाएगा। उप संचालक ने जिले के श्रेष्ठ करने वाले उन्नतशील किसानों से पुरस्कार के लिए आवेदन करने का अनुरोध किया है।

विचार

बिहार में जीत के लिए कांग्रेस फिर काठ की हांडी के भरोसे

लगातार तीसरी बार लोकसभा चुनाव और कई राज्यों में विधानसभा चुनाव हारने से भी कांग्रेस ने कोई सबक नहीं सीखा है। देश में भ्रष्टाचार और विकास के मुद्दे उठाने की बजाय पुराने गढ़े मुर्दे उखाड़ कर अपना खोया हुआ जनाधार फिर से प्राप्त करने की नाकाम कोशिशों में जुटी हुई है। देश की सबसे पुरानी पार्टी को देश के मतदाताओं की नब्ज पकड़ में नहीं आई है। इतने चुनाव हारने के बाद भी कांग्रेस को यह समझ नहीं आया है कि आखिर देश के मतदाता चाहते क्या हैं। मतदाताओं की जरूरतों को समझने की बजाय कांग्रेस सत्ता प्राप्ति के लिए काठ की हांडी को बार-बार चढ़ाने के प्रयास में मात खा रही है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धांधली के आरोपों से यही लगता है कि कांग्रेस के पास मुद्दों की या समझ की कमी हो गई है। कांग्रेस महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में फर्जीवाड़े का आरोप लगा रही है। आश्चर्य यह है कि यही कांग्रेस जब कर्नाटक, हिमाचल और तेलंगाना में चुनाव जीती तब निर्वाचन प्रक्रिया पर ऐसे आरोप नहीं लगाए। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को लेकर फिर एक बड़ा आरोप लगाया।

उन्होंने 5 चरणों में महाराष्ट्र चुनाव में फिक्सिंग की बात कही है। चुनाव आयोग ने राहुल गांधी के आरोपों पर जवाब देते हुए उनके सभी दावों को बेबुनियाद बताया है। उन्होंने एक अंग्रेजी अखबार में लिखे अपने लेख के जरिए भाजपा पर आरोप लगाया कि महाराष्ट्र चुनावों में मैच फिक्सिंग की गई और अब कुछ ऐसा ही बिहार में दोहराया जाएगा। राहुल गांधी ने अपने इस लेख को सोशल मीडिया पर शेयर किया। राहुल गांधी ने लिखा कि भाजपा और उसके सहयोगियों ने महाराष्ट्र में चुनाव जीतने के लिए 5 चरणों की प्लानिंग की थी। कांग्रेस नेता ने यह कहा कि महाराष्ट्र की तरह की मैच फिक्सिंग अगली बार बिहार में होगी, फिर किसी भी राज्य में जहां भाजपा हारती दिख रही हो। राहुल गांधी के इस आरोप पर भाजपा के साथ-साथ जे.डी.यू., हम सहित अन्य दलों ने भी कड़ी आपत्ति जताते हुए प्रतिक्रिया दी।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने राहुल गांधी द्वारा 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को लोकतंत्र में धांधली करने का ब्लूप्रिंट करार दिए जाने पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि कांग्रेस नेता कई चुनाव में हार से दुखी और हताश हैं इसलिए विचित्र साजिशें रचने का आरोप लगा रहे हैं। भाजपा नेता अमित मालवीय ने कहा कि ऐसा नहीं है कि राहुल गांधी को यह नहीं पता कि चुनावी प्रक्रिया कैसे काम करती है। उन्हें बहुत अच्छे से पता है। लेकिन उनका मकसद स्पष्टता नहीं बल्कि अराजकता फैलाना है। जे.डी.यू. नेता के.सी. त्यागी ने कहा कि चुनाव आयोग का जितना दुरुपयोग कांग्रेस ने अपने जमाने में किया है उतना किसी ने नहीं किया। मुख्य चुनाव आयुक्त एम.एस. गिल को सांसद बनाया और मंत्री बनाया। कांग्रेस पार्टी की जो नीतियां रही हैं पिछड़ों और वंचितों को लेकर उसके चलते उनके वोटों पर पहले ही चोरी नहीं बल्कि डाका पड़ चुका है। त्यागी ने कहा कि बिहार चुनाव से पहले ही राहुल गांधी हार मान चुके हैं। चुनाव आयोग ने अपने जवाब में राहुल गांधी के दावों को निराधार बताया। निर्वाचन आयोग ने राहुल गांधी के आरोपों पर लंबा जवाब दिया है। चुनाव आयोग ने कहा कि चुनाव के फैसले पक्ष में नहीं आने के बाद ऐसे आरोप बेतुके हैं।

आपातकाल विस्मृत न हो

डॉ. आशीष वशिष्ठ

अंग्रेजों से आजाद होने के बाद भारत लोकतांत्रिक देश तो बन गया, लेकिन ठीक 25 साल बाद तत्कालीन पीएम इंदिरा गांधी की ओर से थोपी गई इमरजेंसी में लोकतंत्र की धज्जियां उड़ गई थी। 25 जून 1975 की आधी रात में अपनी साा बनाए रखने के लिए इंदिरा ने तानाशाही का ऐसा नमूना पेश किया, जो उस पीढ़ी के लोग अब भी नहीं भूल पाए हैं। बीते साल 25 जून को लोकसभा अध्यक्ष चुने जाने के तुरंत बाद ओम बिरला ने आपातकाल की निंदा करते हुए एक प्रस्ताव पढ़ा, जिसमें आपातकाल को %प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा संविधान पर हमला% बताया गया। इस कदम के बाद सदन में कांग्रेस सांसदों ने विरोध किया। कांग्रेस की ओर से कहा गया कि पांच दशक पुराने इस काले दौर का स्मरण नहीं किया जाना चाहिए। संयोगवश, इंडिया लॉक के सदस्यों ने एक दिन पूर्व 24 जून को सदस्य के रूप में शपथ लेते समय संविधान की प्रतियां उठाई थीं।

ऐसे में अहम सवाल यह है कि क्या कांग्रेस आपातकाल को सही मानती है या फिर यह चाहती है कि लोकतंत्र को कलंकित करने और संविधान का निरादर करने वाले इस तानाशाही भरे कदम का स्मरण नहीं किया जाना चाहिए? क्या कांग्रेस कांग्रेस चाहती है कि आपातकाल पर चर्चा नहीं होनी चाहिए। लेकिन आपातकाल के भुगतभोगी आम लोगों और नेताओं का मानना है कि अतीत की भूलों को विस्मृत करने से उनके दोहराए जाने का खतरा बढ़ जाता है।

वास्तव में कांग्रेस और उसके नेता आपातकाल की गलती को स्वीकार नहीं करते। अगर वह अपनी गलती स्वीकार करते तो वह यह कहने की हिम्मत जुटाते कि 49 साल पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की ओर से देश पर आपातकाल थोपने और राजनीतिक विरोधियों, मीडिया एवं जनता के खिलाफ दमन का चक्र चलाना एक भूल थी।

कांग्रेस को आपातकाल की याद दिलाना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि पिछले कुछ समय से वह संविधान के खतरे में होने का फर्जी हौवा खड़ा कर उसके प्रति प्रतिबद्धता जताने में लगी हुई है। यह ठीक है कि 2024 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस का संख्या बल बढ़ा है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह दबे-छिपे स्वर में आपातकाल को सही ठहराने की कोशिश करती दिखने लगे। उसकी यह कोशिश तो आपातकाल के स्मरण को और अधिक आवश्यक ठहराती है।

यदि वह संविधान के प्रति इतनी ही अधिक प्रतिबद्ध है तो फिर यह क्यों नहीं स्वीकार करना चाहती कि इंदिरा गांधी ने अपनी संसद सदस्यता खारिज किए जाने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को निष्प्रभावी करने के लिए आपातकाल का सहारा लिया और इस क्रम में इसी संविधान को कुचला और उसकी प्रस्तावना को मनमाने तरीके से बदल दिया।

नयी पीढ़ी तो आपातकाल की विभीषिका से बिल्कुल अपरिचित है। बातचीत के क्रम में इस पीढ़ी ने आपातकात शब्द जरूर सुना होगा लेकिन 25-26 जून, 1975 की रात को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा देश पर थोपे गए आपातकाल के दंश की कई पीढ़ियां भुक्तभोगी हैं। आपातकाल के दौरान पूरा देश कारागार में परिवर्तित हो गया था। विपक्ष के सभी नेताओं को रात में ही जगा कर नज़दीकी जेल में ज़बरन उन्हें डाल दिया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यानी आरएसएस और जमात-ए-इस्लामी सहित 26 संगठनों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। आपातकाल के मुखर आलोचक रहे फिल्मी कलाकारों को भी इसका दंश झेलना पड़ा। किशोर कुमार के गानों को रेडियो और दूरदर्शन पर बजाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। देव आनंद को भी अनौपचारिक प्रतिबंध का सामना करना पड़ा था।

आपातकाल की कहानी को बार-बार दोहराना इसलिए भी जरूरी है कि आज की युवा पीढ़ी कम से कम यह जान ले कि जो आजादी और स्वतंत्रता उसे अनायास मिली है, सहज सुलभ है, वह दरअसल कितने बलिदानों से मिली है और उसे कायम रखने के लिए कितनी लड़ाइयां हुई हैं! लोगों को पता चलना चाहिए कि संविधान की हत्या किसे कहते हैं।

पूर्व उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू के शब्दों में, %%आपातकाल की घोषणा ने देश की लोकतांत्रिक संरचना को हिला कर रख दिया। लोकतांत्रिक व्यवस्था के कमज़ोर पक्षों पर व्यापक विचार विमर्श हुआ और देश ने दोबारा कभी भी इसे नहीं लगाए जाने का प्रण किया। यह प्रतिज्ञा तभी बनी रहेगी जब देश बार बार उस आपातकाल से मिलने वाले सबक को याद करता रहेगा। ख़ास कर, युवाओं को आज़ाद भारत के उस काले अध्याय की जानकारी और उससे मिले सबक को जानना होगा।%%

देश में आपातकाल लागू होने के बाद कई त्रासद घटनाएं हुईं। दिल्ली का तुर्कमान गेट कांड भी इनमें एक था। मुस्लिम बहुल उस इलाके को संजय गांधी ने दिल्ली के सौंदर्यीकरण के नाम पर खाली करा दिया। यह काम लोगों की सहमति से नहीं, बल्कि जबरन किया गया गया। बुल्डोजर से लोगों के घर ढहाए गए। जिन्होंने विरोध किया, उन्हें जेलों में ठूंस दिया गया। विरोध के दौरान पुलिस ने लाठियां बरसाईं और आंसू गैस के गोले छोड़े। पुलिस ने गोलियां भी चलाईं। चार लोगों की जान चली गई।

संजय गांधी ने तब तक परिवार नियोजन का अभियान छेड़ दिया था। सड़क से भिखारियों, झोपड़पट्टी के लोगों और राहगीरों को पकड़ कर जबरन नसबंदी के टार्गेट पूरे किए जाने लगे। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में 18 अक्टूबर 1976 को नसबंदी अभियान का विरोध कर रहे आंदोलकारियों पर पुलिस ने सीधी फायरिंग कर दी थी। जिसमें 42 बेगुनाहों की मौत हो गई थी। मृतकों की स्मृति में यहां शहीद चौक बना हुआ है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इमरजेंसी के दौरान देशभर में 1 करोड़ 10 लाख से ज्यादा लोगों की नसबंदी कर दी गई थी।

तत्कालीन अटार्नी जनरल नीरेन डे ने तब सुप्रीम कोर्ट में यह कबूल किया था कि जीने का अधिकार स्थगित है। यदि स्टेट आज किसी की जान भी ले ले तो भी उसके खिलाफ कोई व्यक्ति कोर्ट की में नहीं जा सकता। ऐसे मामलों को सुनने के कोर्ट के अधिकार खत्म कर दिए गए हैं। ऐसा तो अंग्रेजों के राज में भी नहीं था। विलायती शासन में भी कम से कम जनता को कोर्ट में जाने की छूट तो मिली हुई थी।

आपातकाल की अवधि के दौरान सत्ता के दुरुपयोग, कदाचार और ज्यादतियों के विभिन्न पहलुओं की जांच के लिए भारत के सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति जेसी शाह की अध्यक्षता में शाह आयोग का गठन किया था। आयोग द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया था कि आपातकाल के दौरान एक लाख से ज्यादा लोगों को निवारक हिरासत कानूनों के तहत गिरफ्तार किया गया था।

24 जून 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इमरजेंसी का जिक्र करते हुए कहा- जो लोग इस देश के संविधान की गरिमा को समर्पित हैं, जो लोग भारत की लोकतांत्रिक परंपराओं पर निष्ठा रखते हैं, उनके लिए 25 जून न भूलने वाला दिवस है। इमरजेंसी के विरोध में केंद्र की बीजेपी सरकार ने हर साल 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया है। असल में, संविधान हत्या दिवस मनाने का मकसद संविधान की हत्या करने वालों और इस घटना से लोगों को हुई तकलीफों के बारे में आज की पीढ़ी को परिचित कराना है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था, जब भी मैं निराशा होता हूं, तब इतिहास के पन्नों को पलटकर सत्य और प्रेम की जीत को दोहराने वाले तथ्यों का स्मरण करता हूं। इतिहास के पन्नों पर आतातायी और हत्यारे भी रहे हैं और कुछ पल के लिए वो अजेय भी दिखे लेकिन यह ख़ास ख़याल रखें कि अंत में उनका खात्मा हुआ है।

क्या असीम मुनीर ने ही अमेरिका को दी थी ईरान के परमाणु ठिकानों की जानकारी?

नीरज कुमार दुबे

पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल असीम मुनीर की अमेरिका यात्रा से जुड़े तथ्य धीरे-धीरे सामने आ रहे हैं जोकि काफी चौंकाने वाले हैं। हम आपको बता दें कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और मुनीर के लंच से जुड़ी जो खबर पहले सामने आई थी उसमें कहा गया था कि अमेरिका ने ईरान पर हमले की स्थिति में पाकिस्तानी एअरबेस का उपयोग करने के मुद्दे पर बात की थी लेकिन अब जो बात सामने आ रही है वह काफी आश्चर्यजनक है। हम आपको बता दें कि कहा जा रहा है कि लंच कराने से पहले अमेरिका की ओर से ईरान के परमाणु संयंत्रों का नक्शा मुनीर को दिखाया गया और उनसे इस बात की पुष्टि करवाई गयी कि ईरान कहां पर परमाणु बम बना रहा है। इस मुलाकात के ठीक बाद ही अमेरिकी बमवर्षक विमानों ने बंकर बलास्टर बम ईरान के परमाणु संयंत्रों पर गिराकर उसे तहस-नहस कर दिया था। इसलिए सवाल उठ रहा है कि अगर पाकिस्तान ने ही अमेरिका को ईरान के परमाणु ठिकानों के बारे में जानकारी लीक की थी तो इस्लामाबाद ने डबल गेम क्यों खेला? एक ओर वह अमेरिका को ईरान की खुफिया जानकारी मुहैया करा रहा था तो दूसरी ओर अमेरिकी हमले की निंदा करते हुए ईरान के साथ खड़ा होने की नौटंकी भी कर रहा था। हम आपको बता दें कि यह पहली बार नहीं है कि जब पाकिस्तान ने अपने किसी सहयोगी की पीठ में ही छुरा घोंपा हो। 2022 में काबुल में जब 9/11 हमले का षड्यंत्रकारी और अल कायदा का प्रमुख अयमान अल जवाहिरी मारा गया था तब भी यह बात सामने आई थी कि पाकिस्तान ने ही उसकी गुप्त लोकेशन के बारे में अमेरिका को बताया था।

अमेरिका जानता है कि ईरान ही नहीं बल्कि कई और देश जो अपना परमाणु कार्यक्रम चला रहे हैं उन्हें किसी ना किसी तरह पाकिस्तान का सहयोग मिलता है। अमेरिका जानता है कि ईरान के परमाणु कार्यक्रम में भी पाकिस्तान मदद कर रहा है इसलिए वही एक ऐसा देश था जोकि ईरानी परमाणु ठिकानों के बारे में सही जानकारी दे सकता था। इसके लिए ट्रंप ने मुनीर के आगे एक नॉन वेज थाली क्या रखी वो सब कुछ उगलते चले गये। हम

आपको बता दें कि पाकिस्तान ने ही परमाणु तकनीक ईरान, लीबिया और उत्तर कोरिया तक पहुंचाई है। जिस तरह पाकिस्तान अपने परमाणु संपन्न देश होने का फायदा उठाते हुए 卐परमाणु ब्लैकमेलिंग卐 करता है और वित्तीय सहायता और राजनीतिक रियायतें लेता रहता है वैसा ही ईरान भी ना करने लगे इसके लिए अमेरिका और इजराइल उसे रोकना चाहते हैं।

हम आपको यह भी बता दें कि ईरान और पाकिस्तान में एक बड़ी समानता भी है। पाकिस्तान और ईरान ने चरमपंथ और आतंकवाद को विदेश नीति का उपकरण बना लिया है। ईरान ने हूती विद्रोहियों, हिजबुल्ला, बशर अल-असद की सेना और इराकी मिलिशियाओं के माध्यम से पूरे क्षेत्र में अपने प्रभाव को बढ़ाया है तो वहीं पाकिस्तान ने लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे संगठनों को कश्मीर में आतंकवाद फैलाने के लिए समर्थन दिया। इसके अलावा, पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में वर्षों तक गृहयुद्ध को भड़काने वाले गुटों को पाल-पोस कर तैयार किया। देखा जाये तो यह सभी गतिविधियाँ अलग-अलग नहीं हैं बल्कि यह राज्य-प्रायोजित चरमपंथ और आतंकवाद की सुनियोजित रणनीति है। साथ ही इन देशों ने स्थानीय समुदायों जैसे- बलूच, पश्तून, कुर्द, अहवाज़ी अरब और अज़ेरी तुर्कों पर जमकर अत्याचार भी किए हैं।

हम आपको यह भी बता दें कि जैसे ही 13 जून से इज़राइल ने ईरान पर सैन्य हमले शुरू किए वैसे ही पाकिस्तान की रणनीतिक बेचैनी और कूटनीतिक संतुलन की परीक्षा शुरू हो गई थी क्योंकि इस्लामाबाद वर्षों से ईरान के परमाणु कार्यक्रम और मिसाइल क्षमता को आगे बढ़ाने में मदद करता आया है और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के तहत ईरान के 卐आत्मरक्षा के अधिकार卐 का समर्थन भी करता रहा है। हालांकि, जब अमेरिका स्वयं इज़राइली कार्रवाइयों में भागीदार बन गया और खाड़ी क्षेत्र अस्थिर हो गया तो पाकिस्तान गंभीर कूटनीतिक दबाव में आ गया। पाकिस्तान के लिए दिक्कत की बात यह है कि उसके दो बड़े आर्थिक साझेदार- सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात, ईरान के कट्टर विरोधी हैं। वहीं अमेरिका के साथ पाकिस्तान अपने संबंध सुधारने की कोशिश कर रहा है। इस परिस्थिति में पाकिस्तान के लिए ईरान को समर्थन देने से इन तीन शक्तिशाली साझेदारों के नाराज़ होने का खतरा है। हालांकि अब युद्धविराम हो चुका है इसलिए जरूर पाकिस्तान ने कुछ राहत महसूस की होगी।

हम आपको यह भी बता दें कि पाकिस्तान के शीर्ष सुरक्षा निकाय राष्ट्रीय सुरक्षा समिति (एनएससी) ने ईरान में अमेरिकी हवाई हमले के बाद क्षेत्रीय स्थिति पर चर्चा करने के लिए बैठक की और इस्लामी राष्ट्र के आत्मरक्षा के अधिकार का समर्थन किया है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की अध्यक्षता में हुई बैठक में सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर सहित शीर्ष असैन्य और सैन्य नेतृत्व ने शिरकत की। पाकिस्तान ने सभी संबंधित पक्षों से संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप बातचीत और कूटनीति के माध्यम से संघर्ष को हल करने का आह्वान किया, तथा अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों और मानवीय कानूनों का पालन करने की जरूरत पर जोर दिया। बताया जा रहा है कि इस बैठक में मुनीर ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ अपनी बैठक के विवरण से सबको अवगत भी कराया।

शासकीय योजनाओं का शत-प्रतिशत क्रियान्वयन और सैचुरेशन हेतु खैरबना ग्राम में लगा बहु-विभागीय शिविर

सभी विभागों को 15 दिवस में लक्ष्य पूर्ण करने के दिए गए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। राज्य शासन के मनशानुरूप शासकीय योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने, पात्र हितग्राहियों को योजनाओं से जोड़ने और सेवा प्रदाय को और अधिक सशक्त बनाने के उद्देश्य से अनुविभाग मनेंद्रगढ़ के चिह्नांकित ग्राम खैरबना में विगत 21 जून 2025 को छ-पत्रिकाव (डिजिटल असेसमेंट फॉर जस्ट गवर्नेंस एंड यूनिवर्सल एक्सेस) और शासकीय योजनाओं के 100% क्रियान्वयन एवं सैचुरेशन के लिए एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर प्रशासनिक संकल्प, बहु विभागीय सहभागिता और जनसंपर्क के प्रभावी समन्वय का उदाहरण बना। शिविर में जनसेवा से जुड़े अनेक विभागों की सक्रिय भागीदारी रही। इनमें राजस्व विभाग, पंचायत विभाग, आदिम जाति कल्याण विभाग, स्वास्थ्य विभाग, पशुपालन विभाग, महिला एवं बाल विकास (द्धष्टष्टस्र), कृषि विभाग, समाज कल्याण विभाग, आधार संशोधन हेतु कॉमन सर्विस सेंटर, उद्यानिकी विभाग, श्रम विभाग, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग एवं प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना शामिल रहे। इन सभी विभागों के अधिकारियों एवं मैदानी अमले की उपस्थिति से शिविर को बहुआयामी सफलता मिली।

इस शिविर में नागरिकों की भागीदारी उत्साहवर्धक रही। दोपहर 3 बजे तक आधार कार्ड में संशोधन और अपडेटेशन के कार्य 10 पूर्ण किए जा चुके थे, वहीं कई अन्य लाभार्थियों की प्रक्रिया भी प्रगति पर थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल दस्तावेजों के अद्यतन को लेकर ग्रामीणों में जागरूकता और रुचि लगातार बढ़ रही है। वहीं स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा कुल 78 नए आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के कार्ड बनाए गए, जिससे अनेक परिवार अब गंभीर बीमारियों के इलाज हेतु आर्थिक सुरक्षा प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सिकल सेल स्क्रीनिंग की भी विशेष व्यवस्था की गई, जिससे कई लोगों की प्रारंभिक जांच की गई और उन्हें समय रहते स्वास्थ्य सलाह प्रदान की गई। इसके साथ ही वनाधिकार अधिनियम के अंतर्गत पूर्व में पूर्ण हो चुके दावों के संबंध में भी दिशा-निर्देश जारी किए गए। प्रशासन ने यह लक्ष्य निर्धारित किया कि आगामी 15 दिवस के भीतर सभी स्वीकृत वन अधिकार पत्र हितग्राहियों को वितरित कर दिए जाएंगे। इससे आदिवासी समुदायों को भूमि पर स्थायी अधिकार प्राप्त होंगे, जो उनके सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण में मील का पत्थर साबित होगा। वहीं श्रम विभाग की ओर से भी उल्लेखनीय कार्य किया गया। कुल 07 नए श्रमिक कार्ड बनाए गए, जिससे असंगठित क्षेत्र के श्रमिक अब शासन की विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा खैरबना ग्राम के उरवापारा एवं बंधपारा क्षेत्रों में स्थित आंगनबाड़ी केन्द्रों की जर्जर स्थिति की जानकारी दी गई। इसे गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों द्वारा ग्राम पंचायत को निर्देशित किया गया कि संबंधित आंगनबाड़ी भवनों के जीर्णोद्धार अथवा नव निर्माण हेतु आवश्यक प्रस्ताव बनाकर तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। शिविर के समापन पर एक समन्वय बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें सभी विभागों की अब तक की कार्यप्रगति की समीक्षा की गई तथा आगामी रणनीति पर विचार विमर्श हुआ। इस बैठक में स्पष्ट निर्देश दिए गए कि सभी विभाग अगले 15 दिनों के भीतर अपने-अपने लक्ष्यों को पूर्ण करें तथा यह सुनिश्चित करें कि कोई भी पात्र हितग्राही शासकीय योजनाओं से वंचित न रहे। समन्वय बैठक में जिला सदस्य रामजीत लकड़ा, एसडीएम लिंगराज सिदार, जनपद सीईओ सुश्री वैशाली सिंह, तहसीलदार समीर शर्मा, मण्डल संयोजक संजय श्रीवास्तव सहित सैकड़ों की ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने आमजनों की सुनी समस्याएं, गंभीरतापूर्वक निराकरण के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने आज कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनदर्शन के माध्यम से आम नागरिकों की समस्याओं को सुना। जिले के ग्रामीण जन और नागरिकों ने जनदर्शन में अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं को सीधे कलेक्टर के समक्ष रखा। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को प्राप्त सभी आवेदनों को प्राथमिकता के साथ शीघ्रता से समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। जनदर्शन में कुल 40 आवेदन प्राप्त हुए। आवेदक नईम खान निवासी मनेन्द्रगढ़ कार्यवाही करने के संबंध में, नानदाऊ निवासी देवगढ़ भूमि के संबंध में, स्वीटी गुप्ता निवासी परसगढ़ी सीमांकन के संबंध में, रामसिंह जारी किए गए ऋण पुस्तिका की द्वितीय प्रति के संबंध में, शांता मिंज निवासी मनेन्द्रगढ़ भूमि सीमांकन के संबंध में, समस्त ग्रामवासी निवासी बंजी पानी समस्या के संबंध में, मनीष सिंह निवासी खोंगापानी रोड़ निर्माण कार्य में घोर अनियमितता के संबंध में, बिफ़ईया निवासी कोथारी भूमि के संबंध में, भरत सिंह निवासी भल्लौर सहमति पत्र रोक देने के संबंध में, नूरजहां बेगम निवासी रामगढ़ आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के रूप में पदस्त कार्य का प्रमाण पत्र देने के संबंध में, महिला स्वयं सहायता समूह निवासी कठौतिया ऋण राशि में गड़बड़ी करने के संबंध में, अमोल सिंह डंगौरा निर्देश का परिपालन न करने के संबंध में, दलप्रताप निवासी हस्तिनापुर भूमि के संबंध में, नीतू श्रीवास्तव निवासी चनवारीडांड सीसी रोड बनाने के संबंध में, अंजू गुप्ता निवासी जनकपुर निर्माण कार्य की राशि न देने के संबंध में, सुखनंदन निवासी मसौरा सीमांकन कराए जाने के संबंध में, रविशंकर निवासी साल्ही नामांतरण के संबंध में, सुमेर सिंह निवासी सगरा जप्ती धान को वापस दिलाए जाने के संबंध में, सरोज खोंगापानी भूमि के संबंध में, शरकत अली खोंगापानी भूमि के संबंध में, शंकरलाल निवासी फुनगा पट्टा निरस्त करने के संबंध में, शहबाज कामिल निवासी मनेन्द्रगढ़ भूमि के संबंध में, जमुनादेवी निवासी खड़गवां भूमि के संबंध में, संतोष सिंह निवासी तोजा भूमि के संबंध में, सुभद्रा निवासी घाघरा आवास का मनरेगा के तहत मजदूरी भुगतान न दिए जाने के संबन्ध में, सीता राम गुप्ता निवासी धनपुर कब्जे का भूमि को जबरन कब्जा करने के सम्बन्ध में निर्देश दिया।

खरीफ सीजन में किसानों को गुणवत्ता युक्त खाद-बीज उपलब्ध कराने कलेक्टर के निर्देश

अपूर्ण अभिलेख वाले दुकानों को दिया गया कारण बताओ नोटिस

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले में खरीफ सीजन की शुरुआत के साथ ही किसानों द्वारा उर्वरक, बीज एवं कीटनाशकों की मांग में तेजी आई है। किसानों को समय पर उच्च गुणवत्ता युक्त कृषि आदान उचित दर पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कलेक्टर के निर्देशानुसार उप संचालक कृषि कार्यालय मनेन्द्रगढ़ द्वारा जिला स्तरीय निरीक्षण टीम गठित कर केल्हारी तहसील अंतर्गत संचालित खाद एवं बीज विक्रय प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के दौरान दुकानों में उपलब्ध बीज एवं खाद की गुणवत्ता की जांच हेतु नमूने लेकर प्रयोगशाला रायपुर भेजे जा रहे हैं। निरीक्षण के दौरान केल्हारी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी, गोविंद बीज भंडार केल्हारी, नोहर यादव बीज भंडार पेंड्री तथा कैलाश गुप्ता बीज भंडार के अभिलेख अपूर्ण पाए गए। इस पर संबंधित विक्रेताओं को कारण बताओ सूचना जारी कर तीन दिवस के भीतर समस्त अभिलेख प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं। जिला प्रशासन द्वारा स्पष्ट किया गया है कि कृषकों के हितों से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा तथा विक्रय प्रतिष्ठानों की नियमित रूप से निगरानी की जाएगी। साथ ही यह सुनिश्चित किया गया कि सभी विक्रेता निर्धारित दर पर ही उर्वरक एवं बीज की बिक्री करें तथा किसी भी प्रकार की कालाबाजारी या मिलावट न हो। निरीक्षण टीम द्वारा यह भी बताया गया कि गुणवत्ता नियंत्रण की यह प्रक्रिया खरीफ सीजन में लगातार जारी रहेगी, ताकि जिले के किसान उच्च गुणवत्ता युक्त कृषि इनपुट प्राप्त कर सकें और उनकी फसल उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो।

जनपद सभाकक्ष में विभिन्न कार्यों की समीक्षा बैठक सम्पन्न

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर के निर्देशन में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंकिता सोम ने आज जनपद सभागार अमृत सदन में विभिन्न कार्यों की समीक्षा ली। जिसमें सर्वप्रथम प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 एवं 2025-26 तक के आवास पूर्णता की ग्राम पंचायत बार समीक्षा ली। समीक्षा के दौरान उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिये हैं कि आवास निर्माण में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। आवास की प्रगति में अपेक्षित परिणाम न आने की स्थिति में संबंधित तकनीकी सहायक, सचिव पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी। गृह पोर्टल अंतर्गत जनपद बार समीक्षा करते हुए सभी जनपदों को 1 सप्ताह के भीतर सभी प्रविष्टियां को पूर्ण करने के निर्देश दिए। संबंधित सचिव, आवास मित्रों के कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग करने की आवश्यकता है, जो आवास मित्र सक्रिय रूप से कार्य नहीं कर रहे हैं। उनको हटाने की कारवाही हेतु सीईओ जनपद को निर्देशित किया गया। मुख्यमंत्री आवास योजना अंतर्गत लक्षित 404 आवासों की भी समीक्षा की गई। इसके साथ ही प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय अभियान अंतर्गत पीएम जन मन के तहत स्वीकृत आवासों की समय सीमा पर जियो टैगिंग तथा समय पर हितग्राहियों पर राशि प्रदाय हेतु सक्रियता सजगता से कार्य करने की आवश्यकता है। जनपद पंचायत मनेंद्रगढ़ अंतर्गत बंजी, सेमरा चैनपुर, केल्हारी के सचिवों को सख्त निर्देश दिए कि समय पर समस्त आवासों को पूर्ण करें पीएमएवाय अंतर्गत सेल्फ सर्वे अंतर्गत शेष लक्ष्यों जिसमें जनपद मनेंद्रगढ़ 178 खड़गवां 51 एवं भरतपुर के शेष 22 कार्यों को दो दिवस में पूर्ण करने के निर्देश दिये। प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत निर्मित आवासों में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की व्यवस्था अनिवार्य रूप से की जाये। साथ ही इसके निर्माण का उद्देश्य एवं उपयोगिता हेतु हितग्राही को जागरूक किया जाये। प्रत्येक आवास के पास वृक्षारोपण किया जाना सुनिश्चित करें।

स्वच्छ सर्वेक्षण ग्रामीण 2025 अंतर्गत जनसहभागिता सुनिश्चित करते हुए क्रियान्वयन करने हेतु निर्देश दिये। सभी ग्राम पंचायतों में व्यापक प्रचार प्रसार हेतु एसएसजी 2025 अंतर्गत दीवार लेखन, सामुदायिक श्रमदान, कर गांव को स्वच्छ रखने हेतु निर्देशित किया गया। ग्राम पंचायत में नियमित रूप से डोर टू डोर अपशिष्ट संग्रहण एवं पृथक्करण कार्यों को सुचारू रूप से संचालन करने के भी निर्देश दिये। स्वच्छाग्रहियों के मानदेय हेतु ग्राम पंचायत विकास योजना अंतर्गत समाहित करें ताकि स्वच्छता सेवकों को समय पर प्रोत्साहन राशि प्रदाय की जा सके। समीक्षा बैठक में बिना पूर्व सूचना के अनुपस्थित रहने वाले बिहारपुर सचिव परशुराम एवं तकनीकी सहायक नरेंद्र कवर को कारण बताओ नोटिस जारी किए जाने की कार्यवाही की गई। समीक्षा बैठक में जनपद पंचायत सीईओ अजय सिंह राठौर, वैशाली सिंह, जिला समन्वयक स्वच्छ भारत मिशन, कार्यक्रम अधिकारी मनरेगा एवं प्रधानमंत्री आवास योजना के तकनीकी सहायकों सहित ग्राम पंचायतों के सचिव उपस्थित रहे।

रीवा/सतना की खबरें

नजूल भूमि निर्वर्तन समिति की बैठक 27 जून को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर बीएस जामोद की अध्यक्षता में 27 जून को संभागीय नजूल भूमि निर्वर्तन समिति की बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक कमिश्नर कार्यालय सभागार में सुबह 11.30 बजे आरंभ होगी। समिति के सभी सदस्यों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया गया है।

संभागीय आईटीआई में प्लेसमेंट ड्राइव 27 जून को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। संभागीय आईटीआई रीवा में 27 जून को प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम सुबह 10 बजे आरंभ होगा। इसमें निजी संस्था मेलॉन लेबोरेटरीज लिमिटेड पीथमपुर के लिए आईटीआई के वर्ष 2024 और 2025 के प्रशिक्षणार्थियों में से अप्रेंटिसशिप के चयन किया जाएगा। इस संबंध में प्राचार्य एसएन मिश्रा ने बताया कि प्लेसमेंट ड्राइव में फिटर, मशीनिस्ट, टर्नर, वेल्डर, इलेक्ट्रीशियन तथा मोटर मैकेनिक व्हीकल ट्रेड के प्रशिक्षणार्थियों को अवसर दिया जाएगा। इसके लिए आयु सीमा 18 से 25 वर्ष निर्धारित की गई है। अवसर का लाभ उठाने के लिए पात्र उम्मीदवार अपने शैक्षणिक दस्तावेज, आधार कार्ड तथा अन्य अभिलेखों एवं पासपोर्ट साइज की फोटो के साथ 27 जून को संभागीय आईटीआई में उपस्थित हो सकते हैं।

जल गंगा संवर्धन अभियान का 30 जून को होगा समापन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा और मऊगंज जिलों में 30 मार्च से शुरू हुए जल गंगा संवर्धन अभियान का 30 जून को समारोह पूर्वक समापन किया जाएगा। इस संबंध में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने बताया कि जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अभियान का समारोह पूर्वक समापन करें। प्रत्येक विकासखण्ड मुख्यालय तथा ग्राम पंचायत स्तर पर सम्मेलन आयोजित कर जल गंगा संवर्धन अभियान की उपलब्धियों की जानकारी दें। समापन समारोह में जिले के प्रभारी मंत्री, सांसदगण, विधायकगण, पंचायत पदाधिकारियों, नगरीय निकाय के पदाधिकारियों तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भागीदारी रहेगी। समापन समारोह में सराहनीय योगदान देने वाले जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, अधिकारियों तथा आमजनों को सम्मानित करें। अभियान के दौरान बनाई गई जल संरचनाओं को खसरे में दर्ज कराएं। अभियान के समापन के लिए पूरी तैयारी के साथ कार्यक्रम आयोजित करें। जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी जल गंगा संवर्धन अभियान की उपलब्धियों की रिपोर्ट अच्छे फोटोग्राफ और वीडियो के साथ तीन जुलाई तक जिला पंचायत कार्यालय को उपलब्ध कराएं। इसमें समापन समारोह के फोटो और वीडियो के विवरण भी शामिल करें।

कमिश्नर कार्यालय में टीएल बैठक 26 जून को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय में 26 जून को दोपहर 2 बजे से टीएल बैठक आयोजित की गयी है। बैठक में रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ई-आफिस, पेंशन प्रकरण, सीएम हेल्पलाइन, एटीआर तथा जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा करेंगे। बैठक में सभी संबंधित अधिकारियों को अद्यतन जानकारी के साथ उपस्थिति के निर्देश दिये गये।

निगमायुक्त द्वारा अवैध कॉलोनियों से संबंधित आपत्तियों की सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नगर निगम आयुक्त डॉ. सौरभ सोनवणे द्वारा वर्ष 2016 के पूर्व अस्तित्व में आई कॉलोनियों के संबंध में सार्वजनिक उपयोग हेतु भूमि न छोड़ने वाले कॉलोनाइजरों को जारी किए गए नोटिस के संदर्भ में प्राप्त दावे/आपत्तियों की सुनवाई स्वयं की जाएगी। साथ ही, नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत चिन्हित अन्य अवैध कॉलोनियों के संबंध में भी प्राप्त आपत्तियों की सुनवाई आयुक्त स्वयं करेंगे। नागरिकों की सुविधा एवं निष्पक्ष निराकरण हेतु यह सुनवाई प्रत्येक मंगलवार को प्रातः 11:00 बजे से दोपहर 01:00 बजे तक नगर निगम कार्यालय में की जाएगी। निगम आयुक्त ने कहा कि प्रत्येक दावा प्रकरण का निराकरण मौके पर ही किया जाएगा जिससे किसी प्रकार विसंगतियां उत्पन्न न हो। आयुक्त ने समस्त संबंधित कॉलोनाइजरों, आवेदकों एवं नागरिकों से समय पर उपस्थित होकर अपनी आपत्तियाँ प्रस्तुत करने की अपील की है।

नगर निगम ने वार्ड 7, 8 एवं 9 का भ्रमण कर स्थलीय निरीक्षण किया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नगर निगम आयुक्त डॉ. सौरभ सोनवणे ने वार्ड 7, 8 एवं 9 का भ्रमण कर स्थलीय निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। भ्रमण के दौरान वार्ड 7 में हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी के पास स्थित अनुपयोगी रिक्त स्थल का अवलोकन करते हुए आयुक्त ने उस स्थल को सार्वजनिक हित में विकसित करने की योजना तैयार करने को कहा। साथ ही, समीपस्थ नाले की समुचित सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। बोदाबाग में वार्ड 8 एवं 9 दोनों को कवर करने वाले नाले की स्थिति का निरीक्षण करते हुए आयुक्त ने पीडब्ल्यूडी के कार्यपालन यंत्री को कहा कि शीघ्र ही कार्ययोजना बनाकर नाले निर्माण के विस्तार कार्य का ॡ यान्वयन सुनिश्चित करें, जिससे बरसात के दौरान होने वाली जलप्लावन की समस्या से नागरिकों को राहत मिल सके। बोदाबाग रोड नीम चौराहा के पास में स्थित एक अन्य रिक्त स्थल का निरीक्षण कर उसे निगम के जोन कार्यालय हेतु विकसित करने की दिशा में कार्ययोजना तैयार करने को कहा गया। इसके अतिरिक्त निगम आयुक्त ने कोठी कंपाउंड क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले अंबेडकर बाजार, व्यंकट बाजार एवं अन्य भवनों का भी निरीक्षण किया। उन्होंने निर्देश दिए कि उक्त क्षेत्र में जिसमें संपूर्ण क्षेत्र का दस्तावेजी रिकॉर्ड संकलित कर एक बेहतर और स्थायी विकास योजना प्रस्तुत की जाए तथा समग्र विकास हेतु इंटीग्रेटेड प्रोजेक्ट तैयार किया जाए। इस अवसर पर पीडब्ल्यूडी कार्यपालन यंत्री, निगम से कार्यपालन यंत्री श्री राजेश सिंह, उपायुक्त श्री एमएस सिद्दीकी, सहायक यंत्री श्री एसके गर्ग, श्री अभिनव चतुर्वेदी, जनप्रतिनिधि श्री शिवदत्त पाण्डेय सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

नगर निगम रीवा द्वारा खुले में कचरा फेंकने पर की गई चालानी कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नगर निगम रीवा द्वारा शहर में गंदगी फैलाने वालों पर अब कड़ी निगरानी के साथ कड़ी कार्रवाई की जा रही है। निगम द्वारा शहर के प्रमुख 13 स्थानों पर अत्याधुनिक स्मार्ट कैमरों और स्पीकर सिस्टम की स्थापना की गई है, जिसके उपयोग से सार्वजनिक स्थलों पर खुले में कचरा फेंकने जैसे कृत्यों पर तुरंत प्रभावी कार्रवाई की गई। इस ₹ म में नगर निगम की स्वच्छता टीम ने पीटीएस चौराहा स्थित हनुमान मंदिर के समीप एक फल्न विर्ेता को सार्वजनिक स्थान पर कचरा फेंकते हुए रंगे हाथों कैमरे में रिकॉर्ड किया। जिस पर तत्काल कार्रवाई करते हुए स्वच्छता टीम ने फल्न विर्ेता पर ?1000 का जुर्माना लगाया साथ ही दुकानदार को सख्त चेतावनी दी गई कि भविष्य में यदि ऐसा कृत्य दोहराते पाए जाने पर कठोर कार्रवाई की जाएगी। निगम आयुक्त डॉ सौरभ सोनवणे ने बताया कि स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत रीवा शहर को स्वच्छ, सुंदर बनाने हेतु निगम पूरी तत्परता से लगा है। उन्होंने बताया कि शहर के मुख्य 13 चौराहों पर 52 स्मार्ट कैमरे लगाए जा चुके हैं, जो चौबीसों घंटे निगरानी कर रहे हैं। साथ ही, नगर निगम ने नागरिकों से अपील की है कि वे अपने घर, दुकान या प्रतिष्ठान से निकलने वाले कचरा को निर्धारित कचरा संग्रहण वाहनों को ही दें, और सार्वजनिक स्थलों पर कचरा न फेंके। इससे शहर की छवि और नागरिकों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

ईरान-इजराइल युद्ध के चलते देशभर में 60+ फ्लाइट कैंसिल

दिल्ली (एजेंसी)। ईरान-इजराइल युद्ध के चलते भारत से मिडिल ईस्ट आने-जाने वाली फ्लाइट्स पर असर पड़ा। बढ़ते तनाव और एयरस्पेस बंद होने से अब तक 60 से ज्यादा उड़ानें रद्द हो गई थीं। दिल्ली एयरपोर्ट से 48 फ्लाइट्स कैंसिल हुई। जयपुर एयरपोर्ट से 6 फ्लाइट्स रद्द हुईं। इनमें मिडिल ईस्ट आने-जाने वाली 3-3 उड़ानें शामिल हैं।

लखनऊ एयरपोर्ट से अबु धाबी और शारजाह जाने वाली 2 फ्लाइट को यूएई-कतर एयरस्पेस बंद होने पर कैंसिल किया गया है। अहमदाबाद एयरपोर्ट आने वाली 5 फ्लाइट कैंसिल कर दी गई हैं। इनमें लंदन, अबु धाबी, दुबई, कुवैत और दोहा से आने वाली उड़ानें शामिल हैं। वहीं, अमृतसर एयरपोर्ट से दुबई जाने वाली फ्लाइट एस-55 भी रद्द हुई है।

हालांकि अब एअर इंडिया ने एक बयान जारी करते हुए कहा है कि मिडिल ईस्ट के कुछ हिस्सों में हवाई क्षेत्र धीरे-धीरे फिर से खुल रहे हैं, इसलिए एअर इंडिया आज से इस क्षेत्र के लिए उड़ानें फिर से शुरू करेगी। यूरोप से आने-जाने वाली उड़ानें, जिन्हें पहले रद्द कर दिया गया था, आज से धीरे-धीरे फिर से शुरू की जा रही हैं, जबकि अमेरिका और कनाडा के पूर्वी तट से आने-जाने वाली सेवाएं जल्द शुरू होंगी।दरअसल, 23 जून की रात को ईरान ने अपने परमाणु ठिकानों पर हमलों का बदला लेने के लिए कतर में अमेरिका के अल-उदीद एयर मिलिट्री बेस पर 6 मिसाइलें दागी। इसके बाद कतर, बहरीन, यूएई, इराक और कुवैत ने अपना एयर स्पेस अस्थायी रूप से बंद कर दिया था।

रानी दुर्गावती की समाधि स्थल पहुँचे मुयमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)। गोंडवाना साम्राज्य की महारानी वीरांगना रानी दुर्गावती के 462 वें बलिदान पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार को जबलपुर के नर्रई नाला स्थित समाधि स्थल पहुँचकर पूजा-अर्चना की तथा रानी दुर्गावती को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके, राज्यसभा सदस्य श्रीमती सुमित्रा वाल्मीकि, सांसद श्री आशीष दुबे, महापौर श्री जगत बहादुर सिंह अन्नू, विधायक सर्व श्री सुशील कुमार तिवारी इंदु, अशोक रोहाणी, संतोष वरकड़े, डॉ. अभिलाष पांडे एवं नीरज सिंह भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समाधि स्थल पर रानी

दुर्गावती अमर रहे के नारों के बीच रानी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। मुख्यमंत्री ने रानी दुर्गावती के सुपुत्र वीरनारायण को भी पुष्पांजलि अर्पित की तथा जनजातीय समाज के आराध्य बड़ादेव की पूजा अर्चना की। इससे पहले वीरांगना रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करने समाधि स्थल पहुँचे मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनजातीय समाज के लोगों का अभिवादन किया। समाधि स्थल पर मुख्यमंत्री का स्वागत मंडला जिले के मोहगांव तथा डिंडौरी जिले के करंजिया से आये बैगा जनजातीय नर्तक दल ने बैगा और करमा नृत्य की प्रस्तुति से किया। डॉ. यादव भी इस मौके पर अलग अंदाज में नजर आये।

उन्होंने बैगा नर्तक दल के सदस्यों के साथ जमीन पर बैठकर नगाडा बजाया। डॉ. यादव बैगा नर्तक दल के सदस?यों से बडी ही आत्मीयता से मिले तथा अपने मोबाइल से दल में शामिल सदस्यों के साथ सेल्फी ली। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नर्तक दल के प्रत्येक सदस्य को पाँच-पाँच हजार रुपये देने की घोषणा भी की।

दहेज हत्या केस-आरोपी बोला, ऑपरेशन सिंदूर का हिस्सा था

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को दहेज हत्या के आरोपी को पुलिस के सामने सरेंडर से छूट देने से इनकार कर दिया। आरोपी ने कोर्ट के सामने दलील दी थी कि वो ऑपरेशन सिंदूर का हिस्सा था। आरोपी ने कहा- मैं 20 साल से राष्ट्रीय राइफल्स में ब्लैककैट कमांडो हूं। जस्टिस उज्ज्वल भुइयां और जस्टिस विनोद चंद्रन की बेंच ने कहा, आप ऑपरेशन सिंदूर का हिस्सा थे, इससे आपको घर पर अत्याचार करने की आजादी नहीं मिल जाती है। आप देखिए कि फिजिकली कितने फिट हैं, ये दिखा रहा है कि आपने अपनी पत्नी का गला घोंट दिया हो, उसे मार डाला हो। भारत ने 22 अप्रैल को हुए पहलगाम हमले का बदला लिया था। 6-7 मई की रात 1:05 बजे पाकिस्तान और पोक में एयर स्ट्राइक की थी। इसे ऑपरेशन सिंदूर नाम दिया गया। सुप्रीम कोर्ट ने 20 साल पुराने इस केस में फैसला सुनाया है। 2004 में आरोपी बलजिंदर को अमृतसर की ट्रायल कोर्ट ने दोषी करार दिया था। इसके खिलाफ बलजिंदर ने हाईकोर्ट में अपील की थी। बलजिंदर ट्रायल कोर्ट के आदेश पर सजा काट रहा था। इस दौरान हाईकोर्ट ने इस आधार पर सजा पर रोक लगा दी थी, क्योंकि आरोपी 3 साल से ज्यादा जेल काट चुका था।

12 दिन में कोरोना केस 3000 घटे

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में कोरोना वायरस के केस बीते 2 हफ्ते से घट रहे हैं। 12 दिन में 3000 से ज्यादा एक्टिव केस कम हुए हैं। 12 जून को देशभर में 7131 एक्टिव केस थे, जिनकी संख्या घटकर 4089 पहुंच गई है। बीते 24 घंटे में केवल 7 नए मामले सामने आए हैं। 336 मरीज रिकवर हुए हैं।

स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, कोरोना के नए वैरिएंट से जनवरी 2025 से अब तक 127 की मौत हुई है। बीते 24 घंटे में 3 मरीजों ने जान गंवाई है। सबसे ज्यादा 40 मौतें केरल में हुई हैं।

ऑपरेशन सिंधु- इजराइल से 160 भारतीयों का रेस्क्यू

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान और इजराइल के बीच चल रहे संघर्ष के बीच ऑपरेशन सिंधु के तहत 604 भारतीय नागरिकों को जॉर्डन और मिस्र के रास्ते इजराइल से सुरक्षित निकाला गया है। 160 भारतीय नागरिकों का पहला जत्था 24 जून को नई दिल्ली पहुंचेगा। इजराइल में भारतीय दूतावास ने सोमवार को यह जानकारी दी। हालांकि इजराइल से जॉर्डन, फिर अम्मान से रवाना हुई फ्लाइट को कुवैत डायवर्ट कर दिया गया, क्योंकि सोमवार रात अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर किए गए ईरानी हमलों के कारण एयर स्पेस बंद हो गया था। इससे पहले ऑपरेशन सिंधु के तहत भारत सरकार ने सोमवार को ईरान के मशहद से 290 भारतीय और एक श्रीलंकाई नागरिक को

सुरक्षित दिल्ली पहुंचाया। इस तरह अब तक बचाए गए भारतीयों की कुल संख्या 2003 हो गई है।

केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री पबित्रा मार्गेरिटा ने बताया भारत सरकार ने ऑपरेशन सिंधु के हिस्से के रूप में अगले दो से तीन दिनों में ईरान से तीन एक्स्ट्रा इवैक्यूएशन फ्लाइट्स निर्धारित की हैं।

सूरत में बारिश से बाढ़ जैसे हालात, स्कूल बंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात में पिछले 2 दिन से तेज बारिश हो रही है। सूरत में 24 घंटे में 10 इंच बारिश दर्ज की गई है। शहर के कई इलाकों में बाढ़ जैसी स्थिति बन गई है। अधिकतर सड़कों पर पानी भर गया है। शहर के स्कूल भी बंद कर दिए गए हैं।लगातार बारिश से दो स्टेट हाईवे में जलभराव हो गया है। 4-5 हाउसिंग सोसाइटी में पानी भर गया है। पूना पर्वत गाम, वराछा, कपोदरा, कटारगाम, वेद रोड और जहांगीर पुरा जैसे निचले इलाकों में लोगों के घरों में पानी घुस गया है। इधर, दक्षिण पश्चिम मानसून ने मंगलवार को हरियाणा में भी एंट्री कर ली। इसके साथ ही दिल्ली को छोड़कर मानसून सभी राज्यों में पहुंच गया है। 24 मई को तय तारीख से 8 दिन पहले मानसून ने केरल में दस्तक दी थी।दिल्ली में सामान्य तौर पर 30 जून तक मानसून पहुंचता है। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और यूपी के कुछ जिलों में मानसून का प्रवेश बाकी है। आमतौर पर मानसून 8 जुलाई तक पश्चिमी राजस्थान के पोखरण में पहुंचता है। उत्तर प्रदेश में जून में बारिश का 50 साल का रिकॉर्ड टूट गया है। 1971 से 2020 के बीच हुई औसत बारिश के मुकाबले इस साल 25त्न ज्यादा बरसात हुई है।

कुएं में गैस रिसी, 5 लोगों की मौत

गुना (एजेंसी)। गुना में कुएं में गिरे बछड़े को निकालने उतरे 6 लोगों में से पांच की मौत हो गई। एक युवक हादसे से पहले खुद कुएं से बाहर आ चुका था। घटना धरनावदा गांव में मंगलवार सुबह करीब 10 बजे हुई।

सूचना मिलने पर एसपी अंकित सोनी, की यूनिट, समेत पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची और रेस्क्यू शुरू किया। रेस्क्यू टीम ऑक्सीजन सिलेंडर लेकर कुएं में उतरी और खटिया और रस्सी के सहारे 5 लोगों को कुएं से निकाला। ग्रामीणों ने

मौके पर पहुंचे कलेक्टर की गाड़ी को घेर लिया। उनका कहना है कि ग्रामीण इतनी दूर से पहले आ गए, जबकि धरनावदा पुलिस और एम्बुलेंस समय से नहीं आ पाई। दो लोगों को प्राइवेट एम्बुलेंस से अस्पताल भेजना पड़ा। दो घंटे तक प्रशासन नहीं पहुंचा। गुना कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल ने बताया कि कुएं में संभवत: कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस का रिसाव हुआ।

पंजाब में जल्द होगा मंत्रिमंडल फेरबदल

पंजाब (एजेंसी)। पंजाब में आम आदमी पार्टी सरकार एक बार फिर बड़े सियासी बदलाव की तैयारी में है। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने मंगलवार को राजभवन में राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया से मुलाकात की।

मुलाकात के बाद मीडिया से बात करते हुए सीएम ने साफ किया कि आने वाले 3-4 दिनों में मंत्रिमंडल में फेरबदल किया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने राज्यपाल के सामने चंडीगढ़ में आप को कार्यालय के लिए जगह देने की मांग भी रखी। सीएम ने कहा कि पार्टी ने सभी नियम पूरे कर लिए

हैं और वे इसे लेकर गवर्नर को लिखित में जानकारी दे चुके हैं। जल्द ही चंडीगढ़ में आम आदमी पार्टी का अपना कार्यालय होगा। वहीं, उन्होंने स्पष्ट कहा कि आने वाले 2-4 दिनों में कैबिनेट में विस्तार की तैयारी है।

राजा मर्डर केस-लोकेंद्र 72 घंटे की ट्रांजिट रिमांड पर

इंदौर/ग्वालियर (एजेंसी)। राजा रघुवंशी की हत्या के बाद सोनम शिलॉन्ग से लौटकर इंदौर के जिस फ्लैट में रुकी थी, उसके मालिक लोकेंद्र तोमर को ट्रांजिट रिमांड पर सौंपा गया है। लोकेंद्र को सोमवार को ग्वालियर से गिरफ्तार किया था। मंगलवार को शिलॉन्ग एसआईटी ने उसे कोर्ट में पेश किया।

शिलॉन्ग पुलिस को लोकेंद्र की मिली 72 घंटे की ट्रांजिट रिमांड मिली है। शिलॉन्ग पुलिस लोकेंद्र को इंदौर लाएगी। इसके बाद फ्लाइट के जरिए गुवाहटी और फिर बाय रोड शिलॉन्ग ले जाएगी। शिलॉन्ग में उसे कोर्ट में पेश कर पूछताछ के लिए पुलिस रिमांड पर लिया जाएगा। पुलिस इंदौर लाने से पहले उसका मेडिकल टेस्ट कराएगी। इसके बाद बाय रोड इंदौर के लिए रवाना होगी। पेशी के लिए जाते वक्त लोकेंद्र ने मीडिया से कहा- मुझे अभी आरोपों का पता नहीं है।

छूटकर आऊंगा तो प्रेस कॉन्फ्रेंस करूंगा। इससे पहले पुलिस ने लोकेंद्र का मेडिकल चेकअप कराया। लोकेंद्र की बिल्डिंग के फ्लैट में सोनम 30 मई से 7 जून तक रुकी थी। उसने ये बिल्डिंग शिलोम जेम्स को किराए पर दी थी। पुलिस सोमवार शाम करीब 4.30 बजे ग्वालियर के गांधीनगर में एमके प्लाजा के फ्लैट नंबर 105 में पहुंची थी। प्लाजा के गार्ड ने बताया कि सिविल ड्रेस में चार लोग आए थे। उन्होंने गाड़ी दूर ही खड़ी कर दी थी।

काशी में शाह की 4 मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक

वाराणसी (एजेंसी)। गृहमंत्री अमित शाह ने काशी में 4 राज्यों के सीएम के साथ मीटिंग की। होटल ताज में 25वीं सेंट्रल जोनल काउंसिल की बैठक हुई।

इसमें यूपी, एमपी, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री और 120 अधिकारी शामिल हुए। सेंट्रल जोनल काउंसिल की बैठक में विकास, सड़क, सुरक्षा, परिवहन, बिजली, पानी, पर्यावरण, वन समेत राज्यों के बीच सीमा विवाद, राज्य सरकारों से जुड़े ऐसे मामले जो केंद्र सरकार के बिना नहीं सुलझ सकते...इन पर चर्चा हुई। साथ ही इन राज्यों में बांग्लादेशी घुसपैठियों, रोहिंग्या मुस्लिमों के अलावा भारत-नेपाल के सीमावर्ती इलाकों में घुसपैठ, पॉक्सो, महिला अपराध समेत अन्य सुरक्षा से संबंधित मामलों को लेकर चर्चा हुई। हिमालय से जुड़ी नदियों को जोड़ने, पर्यावरण, खनन, कृषि, धार्मिक पर्यटन जैसे अहम मुद्दों पर भी चर्चा हुई।

25 जून को लॉन्च हो सकता है एक्सियम-4 मिशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला का अंतरिक्ष मिशन एक्सियम-4 25 जून को लॉन्च हो सकता है। भारतीय समयानुसार दोपहर 12.01 बजे इसकी लॉन्चिंग संभव है। अगर ये तय वक्त पर लॉन्च होता है, तो इसकी डॉकिंग 26 जून को शाम 4:30 बजे होगी। इसकी जानकारी मंगलवार को नासा ने दी। फॉल्कन 9 रॉकेट पर लॉन्च करने के बाद क्रू को एक नए स्पेसएक्स ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट से इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर भेजा जाएगा। एक्सियम मिशन 4 में चार देशों के चार एस्ट्रोनॉट 14 दिन के लिए स्पेस स्टेशन जाने वाले हैं।

शुभांशु आईएसएस पर जाने वाले

पहले और स्पेस में जाने वाले दूसरे भारतीय होंगे। इससे पहले राकेश शर्मा ने 1984 में सोवियत यूनियन के स्पेसक्राफ्ट से अंतरिक्ष यात्रा की थी।

एक्सियम-4 मिशन का नेतृत्व कमांडर पैगी व्हिटसन कर रही हैं, जिसमें शुक्ला मिशन पायलट हैं। हंगरी के टिबोर कापू और पोलैंड के स्लावोज उज्नान्स्की-विस्नीव्स्की मिशन एक्सपर्ट हैं।

29 मई, 8 जून, 10 जून, 11 जून, 12 जून और 22 जून को भी लॉन्चिंग शेड्यूल थी, लेकिन आईएएस के सर्विस मॉड्यूल के पिछले हिस्से में हाल ही में हुए मरम्मत कार्य की समीक्षा और सुरक्षा जांच के लिए इसे अनिश्चितकाल के लिए टाल दिया गया।एक्सियम-4 में चार देशों के चार एस्ट्रोनॉट 14 दिन के लिए स्पेस स्टेशन जाने वाले हैं।

बाइक में फंसा हाईटेंशन लाइन का तार, 3 जिंदा जले

बालाघाट (एजेंसी)। बालाघाट में बिजली की हाईटेंशन लाइन की चपेट में आने से तीन लोग जिंदा जल गए। हादसा लांजी थाना इलाके में मंगलवार सुबह करीब 8.30 बजे हुआ। तीनों एक ही परिवार के सदस्य थे और बाइक से देवलगांव के दुर्गा मंदिर जा रहे थे।

मृतकों की पहचान सर्रा निवासी सेवकराम पांचे (30), उनकी पत्नी रेणुका पांचे (28) और भाई भोजराज पांचे (28) के रूप में हुई है। पूर्व सरपंच का कहना है कि शव करीब एक घंटे तक जलते रहे। एसडीएम कमल चंद्र सिंहसार ने बताया- हाईटेंशन लाइन के ऊपर पेड़ की एक डाली गिर गई। इससे तार टूटकर सड़क पर आ गया। इसी दौरान मंदिर जा रहे लोगों की बाइक उसमें उलझ गई। बिजली चालू होने की वजह से बाइक ने आग पकड़ ली।

ब्राह्मणों ने जिस कथावाचक को पीटा...अखिलेश ने उसे सम्मानित किया

लखनऊ। यूपी के इटावा में कथावाचक की पिटाई का मामला यादव बनाम ब्राह्मण होता जा रहा है। अखिलेश यादव ने कथावाचक और उनके साथियों को लखनऊ बुलाया। उन्हें ढोलक और हारमोनियम गिफ्ट की, कथा भी कहलवाई। 21-21 हजार रुपए लिफाफे में दिए। हालांकि 51-51 हजार रुपए देने का ऐलान किया है। अखिलेश ने कहा- प्रभुत्ववादी सीमाएं लांघ गए हैं। ये वर्चस्ववादी लोग सिर तक मुड़वा दे रहे हैं, रातभर पीटते हैं, ढोलक छीन लेते हैं और पैसों की मांग करते हैं।

22 जून: सिर मूड़ा, नाक रगड़वाई

चुनाव आयोग ने राहुल गांधी को बुलाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। इलेक्शन कमीशन ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी को लेटर लिखा है। इसमें महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धांधली के उनके आरोपों पर चर्चा के लिए बुलाया है। लेटर 12 जून को मेल और राहुल के आवास पर भी भेजा गया है।

ईसी ने लेटर में लिखा- भारत की संसद के पारित इलेक्टोरल लॉ, उसके नियमों और समय-समय पर चुनाव आयोग के निर्देशों के जरिए बहुत सख्ती से देश में चुनाव आयोजित कराए जाते हैं। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव प्रक्रिया विधानसभा क्षेत्र स्तर पर सेंट्रलाइज्ड आयोजित की जाती है। इसमें ईडी के नियुक्त 1,00,186 से ज्यादा बीएलओ, 288 इलेक्टोरल रजिस्ट्रेशन ऑफिसर, 139 जनरल ऑब्जर्वर, 41 पुलिस ऑब्जर्वर, 71 खर्च ऑब्जर्वर और 288 रिटर्निंग अधिकारी और महाराष्ट्र में राष्ट्रीय और राज्य राजनीतिक दलों के नियुक्त 1 लाख 8 हजार 26 बूथ स्तरीय एजेंट शामिल हैं। इनमें कांग्रेस के 28,421 एजेंट शामिल हैं। महाराष्ट्र चुनाव में मैच फिक्सिंग की गई थी। इसी तरह की

फिक्सिंग अब बिहार में होगी, फिर वहां होगी जहां भाजपा हारती दिख रही हो।राहुल गांधी ने ङ्क पर लिखा- महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री (देवेंद्र फडणवीस) के निर्वाचन क्षेत्र की वोटर लिस्ट में 5 महीनों में 8 प्रतिशत वोटर बढ़ गए थे। कुछ बूथों पर 20 से 50 प्रतिशत तक वोटर बढ़े। बीएलओ ने अज्ञात लोगों के वोट डालने की खबर दी।मीडिया ने बिना वेरिफिकेशन पते वाले हजारों मतदाताओं का पता लगाया। इस पर चुनाव आयोग चुप है।

क्या ये मिलीभगत है।

सेशेल्स नेशनल डे टूर्नामेंट में भारत का बेहतरीन प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय मुक्केबाजों ने सेशेल्स नेशनल डे टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। जिसके तहत भारत के 6 मुक्केबाजों ने इस टूर्नामेंट के फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है। कजाखस्तान में एलोरडा कप में खेल चुके उत्तर प्रदेश के आदित्य प्रताप (65 किलो) ने तीसरे दौर में स्थानीय मुक्केबाज जोवानी बूजिन को रैफरी द्वारा मुकाबला रोके जाने पर हराया। राष्ट्रीय संयुक्त फाइनल्स में रजत पदक विजेता नीरज (75 किलो) ने आरएससी पर दूसरे दौर में जीत दर्ज की। बेलग्रेड मुक्केबाजी चैंपियन रहे और एलीट राष्ट्रीय चैंपियनशिप में कांस्य पदक विजेता हरियाणा के हिमांशु शर्मा (50 किलो) ने मॉरीशस के मथियू एस को 4-1 से हराया। उत्तर प्रदेश के आशीष एम ने 55 किलो वर्ग में मॉरीशस के गुइलॉमी फ्रांसिस को 4-1 से मात दी।

राष्ट्रीय संयुक्त चैंपियनशिप में रजत पदक विजेता हरियाणा के अनमोल (60 किलो) ने सेशेल्स के डारियो गैब्रियेल को 4-1 से हराया। कार्तिक दलाल (70 किलो) को साउथ अफ्रीका के ब्लेसिंग एनजियाना ने 4-1 से शिकस्त दी। एलोरडा कप 2024 के ब्रान्ज मेडल विजेता और राष्ट्रीय खेलों में गोल्ड मेडल जीत चुके गौरव चौहान को 90 प्लस वर्ग में सीधे फाइनल में प्रवेश मिला है।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने हार का सिलसिला तोड़कर जीत के साथ समापन किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने आखिर में अपना जलवा दिखाकर रविवार को एफआईएच प्रो लीग के यूरोपीय चरण में बेल्जियम को 4-3 से पराजित करके अपनी पहली जीत दर्ज की और इस तरह से लगातार सात मैच में हार का सिलसिला खत्म किया। सुखजीत सिंह (21वें, 35वें), अमित रोहिदास (36वें) और हरमनप्रीत सिंह (59वें) के गोल की मदद से भारत ने अपने अभियान का जीत के साथ सकारात्मक अंत किया। भारत इस तरह से आयरलैंड से 14 अंक आगे रहते हुए आठवें स्थान पर रहा। बेल्जियम के लिए आर्थर डी स्लोवर (8वें), थिब्यू स्टॉकब्रोक्स (34वें) और ह्यूगो लैबोचेरे (41वें) ने गोल किए। सुखजीत और दिलप्रीत सिंह के लिए यह यादगार मैच था, जिन्होंने अपने 100 अंतरराष्ट्रीय मैच पूरे किए। भारत को हालांकि इस मैच में भी संघर्ष करना पड़ा। जब अंतिम हूटर बजने में सिर्फ़ दो मिनट बचे थे और स्कोर 3-3 से बराबर था तब भारत ने बेल्जियम के सर्कल के अंदर सेंध लगाई और फिर रेफरल मांगा। फ़ैसला भारत के पक्ष में गया और हरमनप्रीत सिंह ने पेनल्टी स्ट्रोक को गोल में बदलकर अपनी टीम की जीत सुनिश्चित की।

बेल्जियम ने हालांकि शुरू में भारत पर दबाव बनाया। आर्थर डी स्लोवर ने आठवें मिनट में उसकी तरफ से पहला गोल किया। इस तरह से बेल्जियम ने पहले क्वार्टर में शानदार प्रदर्शन करते हुए 1-0 से बढ़त हासिल की।

5वें दिन पर बारिश का साया, भारत-इंग्लैंड लीड्स टेस्ट की मौसम रिपोर्ट

नई दिल्ली। लीड्स में भारत और इंग्लैंड के बीच पहला टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इस मुकाबले का आज यानी 24 जून को पांचवां दिन है। लेकिन पांचवें दिन की शुरूआत से पहले ही भारत-इंग्लैंड के लिए बुरी खबर है कि लीड्स का मौसम खराब है और मैच में बारिश बाधा बन सकती है। इंग्लैंड के खिलाफ 5 मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले मैच में वह ड्राइविंग सीट पर है। लीड्स में खेले जा रहे इस मुकाबले के आखिरी दिन मंगलवार को इंग्लैंड को जीत के लिए 350 रन बनाने हैं। भारत ने उसे 371 रन का लक्ष्य दिया है। यूके मौसम विभाग के अनुसार लीड्स के हेडिंग्ले में सुबह और दोपहर के समय बारिश होगी। दोपहर 12 से 1 बजे के बीच खूब बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग का अनुमान है कि इसके बाद धूप खिला जाएगी, लेकिन बीच में हल्की बारिश होगी। फिलहाल, शुभमन गिल की अगुवाई वाली टीम अगले हफ्ते एजबेस्टन में खेले जाने वाले दूसरे टेस्ट से पहले जीत के साथ अपने नए वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप साइकल की शुरुआत करना चाहेगी। इस बीच, मेजबान इंग्लैंड की निगाहें इतिहास में अपने सबसे बड़े रन चेज करने पर है।

अब टोयो वर्ल्ड चैंपियनशिप पर नीरज चोपड़ा की नजरें, ओस्ट्रावा में होगी प्रतियोगिता

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के स्टार जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने कहा कि वह ओस्ट्रावा में मंगलवारको हने वाली गोल्ड स्पाइक एथलेटिक्स मीट को लेकर काफी उत्साहित हैं। दरअसल, नीरज इस साल अपने अंतिम लक्ष्य टोक्यो में वर्ल्ड चैंपियनशिप में टॉप स्थान हासिल करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। नीरज ने पिछले हफ्ते 88.16 मीटर थ्रो के साथ जूलियन वेबर को हराकर पेरिस डायमंड लीग जीती थी। दो बार के ओलंपिक मेडलिस्ट ने कहा कि चेक गणराज्य के महान खिलाड़ी जान जेलेजनी के साथ उनके कोच और उनकी दृढ़ संकल्प शक्ति के कारण उन्हें अच्छे नतीजों का भरोसा है। 27 वर्षीय खिलाड़ी दोहार में सीजन की शुरुआत डायमंड लीग मीट में अपने पहले 90 मीटर से ज्यादा थ्रो से उत्साहित हैं।

नीरज ने आगे कहा कि, ऐसे महान एथलीट और कोच के साथ काम करके बहुत खुश हूं। तकनीक में थोड़ा और सुधार करने के बाद मैं इस साल पहले ही 0 मीटर थ्रो कर चुका हूं। इसलिए देखते हैं कि अगली बार कब होता है, लेकिन मैं तैयार हूं। हाल ही में हमने निम्बर्क में अच्छी ट्रेनिंग की है। इसलिए मैं यहां ओस्ट्रावा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूंगा। इस सत्र का मुख्य लक्ष्य निश्चित रूप से टोक्यो में वर्ल्ड चैंपियनशिप है। हरियाणा के इस लड़के ने कहा कि जिसने द्विवार्षिक शोपीस के पिछले सीजन में गोल्ड मेडल जीता था। वहीं नीरज ने कहा कि मंगलावर के लिए उनके उत्साह का एक हिस्सा टीवी पर उसेन बोल्ट जैसे महान एथीलटों को अतीत में यहां प्रतिस्पर्धा करते हुए देखने से आता है। जब मैं बच्चा था तो मैंने उसेन बोल्ट जैसे एथलीटों के यहां प्रतिस्पर्धा करते हुए बहुत सारे वीडियो और तस्वीरे देखी थीं। मैं पिछले साल आया था लेकिन चोट के कारण मैं प्रतिस्पर्धा नहीं कर सका।

भारत के दिग्गज दिलीप दोशी के निधन पर क्रिकेट जगत ने जताया दुख

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व स्पिनर दिलीप दोशी का निधन हो गया। 1947 में जन्में दोशी ने 77 साल की उम्र में लंदन में आखिरी सांस ली। उनके निधन से क्रिकेट जगत में शोक की लहर दौड़ गई। दोशी क्रिकेट करियर के बाद सफल हिन्दी कॉमेंटेटर के तौर पर भी बेहद लोकप्रिय रहे। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में 898 विकेट झटकने वाले दोशी ने 238 प्रथम श्रेणी मुकाबलों में 43 बार पांच विकेट झटके। 6 बार एक मैच में 10 विकेट अपने नाम किए। उनके निधन पर सौराष्ट्र क्रिकेट संघ ने कहा कि वे अपने पीछे कौशल, प्रतिबद्धता, उत्कृष्टा की समृद्ध विरासत छोड़ गए हैं। हाल ही में दोशी को बीसीसीआई ने एक समारोह में सम्मानित भी किया था। वे इस महीने की

शुरुआत में लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड पर खेले गए वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में भी शामिल हुए थे।

रिपोर्ट्स के अनुसार, बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाज दोशी का निधन हृदय संबंधी बीमारियों के कारण हुआ। ईएसपीएनक्रिकइंफो के मुताबिक दोशी बीते कई सालों से लंदन में ही रह रहे थे। उनके परिवार में पत्नी कालिंदी, बेटा नयन और बेटी विशाखा हैं। बेटा नय इंग्लैंड की काउंटी क्रिकेट-सरे और महाराष्ट्र के सौराष्ट्र से क्रिकेट खेल चुका है। वहीं दोशी के निधन पर क्रिकेट जगत ने दुख प्रकट किया है। जहां बीसीसीआई ने दोशी की तस्वीर शेयर कर इस दुखद खबर के बारे में जानकारी दी। एक्स पर जारी इस संदेश में बोर्ड ने लिखा कि, बीसीसीआई पूर्व भारतीय स्पिनर दिलीप दोशी के दुखद निधन पर शोक व्यक्त करता है। उनका लंदन में निधन हो गया। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

बैन से बचे रिषभ पंत लेकिन अंपायर से बदतमीजी के लिए आईसीसी ने लगाया जुर्माना

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ लीड्स टेस्ट में भारत के उपकप्तान ऋषभ पंत ने दोनों पारियों में बेहतरीन शतक लगाए। लेकिन इस बीच उन्हें आईसीसी कोड ऑफ कंडक्ट के लेवल 1 के उल्लंघन के लिए आधिकारिक फटकार लगाई गई है। वह भारी चपत से बच गए। लेवल 1 के उल्लंघन में उन्हें कम सजा मिली है। उनकी 50 प्रतिशत मैच पीस कट सकती थी।

पंत ने इंग्लैंड की पहली पारी के दौरान बल्ले से मैदान पर उनके व्यवहार के लिए फटकार लगाई गई। पंत को खिलाड़ियों और प्लेयर सपोर्ट स्टाफ के लिए आईसीसी कोड ऑफ कंडक्ट के आर्टिकल 2.8 का उल्लंघन करने का दोषी पाया गया जो अंतर्राष्ट्रीय मैच के दौरान अंपायर के फैसले पर असंतोष दिखाने से संबंधित है। इसके साथ ही पंत के रिकॉर्ड में एक डिमेरिट पॉइंट जोड़ दिया गया है। ये 24 महीनों में उनकी पहली गलती थी। इंग्लैंड की पारी के 61वें ओवर में जब हैरी ब्रूक और बेन स्टोक्स बल्लेबाजी कर रहे थे, तब पंत को गेंद बदलने को लेकर अंपायर से चर्चा करते देखा गया। बॉल गेज से गेंद की जांच करने के बाद उसे बदलने से इन्कार करने पर पंत ने अंपायर के सामने गेंद को फेंक दिया और अपनी असहमति दिखाई। पंत ने अपनी गलती मान ली। ऐसे में कोई अनुशासनात्मक सुनवाई नहीं हुई। उन्होंने मैच रेफरी रिची रिजर्डसन द्वारा प्रस्तावित दंड को स्वीकार कर लिया।

यशस्वी जायसवाल इस एलिट क्लब में हुए शामिल

नई दिल्ली। इंग्लैंड के खिलाफ 5 टेस्ट मैच की सीरीज के पहले मैच में ऋषभ पंत ने दोनों पारियों में बेहतरीन शतक जड़े। लीड्स टेस्ट में भारत की तरफ से पहली बार किसी मैच में 5 शतक लगे हैं। पंत ने तो गर्दा उड़ाया ही, यशस्वी जायसवाल भी पीछे नहीं रहे। भारत की पहली पारी में यशस्वी जायसवाल ने बेहतरीन शतक जड़ा। इंग्लैंड के खिलाफ कम से कम 500 टेस्ट रन बनाने वाले बल्लेबाजों में औसत के मामले में वह महान डॉन ब्रेडमैन, स्टीवी

डेंप्सर, वॉरेंस रो और जॉर्ज हेडली के एलिट क्लब में शामिल हो चुके हैं।

यशस्वी जायसवाल ने इंग्लैंड के खिलाफ लीड्स टेस्ट की पहली पारी में 159 गेंदों में बेहतरीन 101 रन बनाए। उनकी पहली पारी तक के आंकड़े को देखें तो उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ सबसे ज्यादा औसत से टेस्ट रन बनाने के मामले में सर जॉन ब्रेडमैन का रिकॉर्ड तोड़ दिया था। तब इंग्लैंड के खिलाफ यशस्वी का औसत 90.33 का था, जबकि ब्रेडमैन का औसत 89.78 का है। हालांकि, दूसरी पारी में यशस्वी सिर्फ 4 रन बनाकर आउट हो गए। इससे उनका इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट में औसत गिरकर 81.70 हो गया।

हॉकी खिलाड़ी ललित कुमा उपाध्याय ने किया संन्यास का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय फॉरवर्ड ललित कुमार उपाध्याय ने अंतर्राष्ट्रीय हॉकी को अलविदा कह दिया है। हालांकि, वह घरेलू और लीग मैच खेलते रहेंगे। ललित कुमार के संन्यास लेने से एक दशक से ज्यादा समय तक चले उनके करियर का अंत हो गया। अपने करियर में ललित कुमार उपाध्याय ने कई उपलब्धियां हासिल कीं। इसमें दो ओलंपिक पेरिस और टोक्यो में कांस्य पदक जीतना भी शामिल है।

ललित कुमार उपाध्याय ने भारत द्वारा यूरोप में खेले गए 8 में से 4 मैच खेले। ये मुकाबले 2024-25 प्रो लीग सीजन का हिस्सा थे। उन्होंने अपना आखिरी मैच 15 जून को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेला था। ललित ने सीनियर अंतर्राष्ट्रीय हॉकी में भारत के लिए 183 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 67 गोल किए हैं। ललित कुमार उपाध्याय उत्तर प्रदेश पुलिस में डिप्टी एसपी भी हैं।

ललित ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा कि, ये यात्रा एक छोटे से गांव से शुरू हुई जहां सीमित संसाधन थे, लेकिन सपने असीम थे।

एक स्टिंग ऑपरेशन का सामना करने से लेकर ओलंपिक पोडियम पर खड़े होने तक, एक बार नहीं बल्कि दो बार ये चुनौतियों, विकास और अविस्मरणीय गौरव से भरा रास्ता रहा है। 26 साल बाद अपने शहर से ओलंपियन बनना कुछ ऐसा है जिसे मैं अपने दिल में हमेशा सम्मान और कृतज्ञता के साथ संजोए रखूंगा।

साथ ही इस 31 वर्षीय खिलाड़ी ने अपने करियर में भूमिका निभाने वाले कई लोगों का धन्यवाद किया। उन्होंने लिखा कि, मेरे पहले कोच श्री परमानंद मिश्रा को, जिन्होंने मुझे हॉकी से परिचित कराया और मेरी नींव रखी। हरेंद्र सर को, जिन्होंने मुझे एयर इंडिया में चुनकर पहला ब्रेक दिया। समीर भाई और धनराज सर को जिन्होंने उस दौरान देखभाल और विश्वास के साथ मेरा मार्गदर्शन किया।

ललित ने आगे लिखा कि, बीपीसीएल को, जिन्होंने मुझे नौकरी की पेशकश की और मुझे काम और विकास के 8 सार्थक साल दिए। मेरे दोस्तों और साथियों को जिन्होंने इस यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया। हॉकी इंडिया को जिन्होंने मुझे राष्ट्रीय जर्सी पहनने का मौका दिया। साथ ही राज्य सरकार को मुझे डीएसपी के रूप में नियुक्त करके मेरी यात्रा का सम्मान करने के लिए एक जिम्मेदारी जिसे मैं गर्व के साथ निभाता हूं।

जय शाह को लेकर ये या बोल गए सौरव गांगुली

नई दिल्ली (एजेंसी)। सौरव गांगुली ने भारतीय क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में अपने घटनाप्रधान कार्यकाल को याद करते हुए जय शाह की तारीफ की है। टीम इंडिया के पूर्व कप्तान ने खुलासा किया कि उन्हें बोर्ड के तत्कालीन सचिव और वर्तमान में आईसीसी के अध्यक्ष जय शाह से एक खास तरह की सख्ती और जिद्दीपन की उम्मीद थी लेकिन वह उनकी ईमानदारी और चीजों को व्यवस्थित करने के तरीके से प्रभावित थे। गांगुली और साह अक्टूबर 2019 से सितंबर 2022 तक दुनिया के सबसे अमीर क्रिकेट बोर्ड में एक साथ पदाधिकारी रहे थे। ये कोविड-19 महामारी का दौर था जिसके कारण कुछ महीनों के लिए खेल गतिविधियां ठप्प पड़ गई थीं।

गांगुली ने कोलकाता में अपने आवास पर पीटीआई को दिए विशेष साक्षात्कार में कहा कि, उनका (जय शाह) काम करने का अपना तरीका

था लेकिन उनके बारे में सबसे अच्छी बात ये थी कि वह भारतीय क्रिकेट को आगे बढ़ाने के लिए चीजों को सही तरह से व्यवस्थित करना चाहते थे।

पूर्व कप्तान ने शाह के गृह मंत्री अमित साह के बेटे होने के संदर्भ में कहा कि, देखिए उनके पास ताकत थी, समर्थन था, इसलिए आप उनसे एक खास तरह की सख्ती और जिद्दीपन की उम्मीद करते थे लेकिन उन्होंने भारतीय क्रिकेट को आगे बढ़ाने के लिए काफी कुछ किया।

ये पहला मौका था जबकि गांगुली और शाह दोनों बीसीसीआई में एक साथ किसी पद पर थे। इसके पहले गांगुली बंगाल क्रिकेट संघ के अध्यक्ष जबकि शाह गुजरात क्रिकेट संघ में पदाधिकारी थे।

गांगुली की जगह 2022 में एक अन्य पूर्व टेस्ट खिलाड़ी रोजर बिन्नी को बीसीसीआई का अध्यक्ष नियुक्त किया गया, जबकि शाह नवंबर 2024 तक सचिव बने रहे। इसके बाद वह 36 वर्ष की उम्र में आईसीसी के सबसे युवा अध्यक्ष बने।

एक राजनीतिक परिवार के वारिस और एक प्रसिद्ध क्रिकेट स्टार के बीच आपसी रिश्तों के बारे में पूछे जाने पर गांगुली ने कहा कि उनके बीच सौहार्दपूर्ण संबंध थे जो आज भी कायम हैं।

गांगुली ने आगे कहा कि, हमारे बीच बहुत अच्छे संबंध थे और आज भी हमारे संबंध बहुत अच्छे हैं।

मीटर रीडरों ने नौकरी से निकाले जाने के विरोध में मांगी इच्छा मृत्यु

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में विद्युत विभाग के आउटसोर्स मीटर रीडर कर्मचारियों ने नौकरी से निकाले जाने के विरोध में [16] कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचकर जिला प्रशासन से इच्छा मृत्यु की मांग की। 50 से अधिक कर्मचारियों का आरोप है कि विद्युत विभाग के अधिकारियों ने षड्यंत्र रचकर उन पर अनर्गल आरोप लगाकर बिना लिखित आदेश या श्रम कानून का पालन किए नौकरी से निकाल दिया।कर्मचारियों का कहना है कि निकाले जाने के एक महीने के भीतर ही नए कर्मचारियों की भर्ती कर ली गई, जिसमें मोटी रकम के लेनदेन की बात सामने आई। पिछले 12 महीनों से वे मुख्य अभियंता, अधीक्षण अभियंता, कलेक्टर और संभागीय आयुक्त कार्यालय के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। लगातार अनदेखी और शोषण से त्रस्त होकर कर्मचारी धरने पर बैठे हैं और अब इच्छा मृत्यु की मांग कर रहे हैं। उन्होंने प्रशासन से न्याय की गुहार लगाई है।

आशा कार्यकर्ता की फर्जी नियुक्ति के नाम पर 90 हजार की ठगी, कलेक्ट्रेट में शिकायत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में सरकारी विभागों में फर्जी नियुक्तियों का एक और मामला सामने आया है। गंगेव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आशा कार्यकर्ता के पद पर नियुक्ति के नाम पर किरण देवी साकेत से 90 हजार रुपये की ठगी का आरोप लगा है। किरण देवी ने बताया कि उन्होंने आशा कार्यकर्ता के लिए आवेदन दिया था। खंड चिकित्सा अधिकारी देवव्रत पांडे ने नियुक्ति के लिए 80 हजार रुपये लिए। रिश्वत के बाद बीएमओ कार्यालय से उनके नाम एक नियुक्ति पत्र भी जारी हुआ, जिसके आधार पर उन्होंने तीन महीने तक काम किया और रजिस्टर पर हाजिरी दी। बाद में भोपाल जाने के नाम पर उनसे 10 हजार रुपये और लिए गए।तीन महीने बाद पता चला कि उनकी नियुक्ति हुई ही नहीं। हालांकि विज्ञापन निकाला गया था, लेकिन पोर्टल बंद होने से किसी की नियुक्ति नहीं हुई। अधिकारियों ने पहले आश्वासन दिए, लेकिन बाद में पैसा लौटाने से इनकार कर दिया। परेशान होकर किरण देवी ने कलेक्ट्रेट में जन सुनवाई के दौरान शिकायत दर्ज कराई, जिसमें रिश्वत और धोखाधड़ी का आरोप लगाया। जिला प्रशासन से मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की गई है।

जमीन विवाद में दो छोटे भाइयों ने की हत्या

सतना के चोरवरी गांव की घटना; बड़े भाई को लाठियों से पीट-पीटकर मार डाला

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के चोरवरी गांव में सोमवार रात जमीन विवाद को लेकर दो भाइयों ने अपने बड़े भाई की हत्या कर दी। घटना रात करीब 10 बजे की है। मृतक का नाम जयराम कुशवाहा है।

पुलिस के मुताबिक, जयराम कुशवाहा अपनी पत्नी के साथ खेरवा स्थित अहरी में सो रहे थे। इसी दौरान छोटे भाई लालमन और मोहन कुशवाहा अपने बेटों रामशरण और ब्रज किशोर के साथ पहुंचे। चारों ने जयराम को जबरन घसीटकर पुराने घर ले जाकर लाठियों से पीटा।

हमले के वक्त जयराम का बेटा रविशंकर पुराने घर में भैंस के लिए पगरा बना रहा था। आरोपियों ने उस पर भी हमला कर दिया। बचाव करने आई जयराम की बहू हीरा बाई और छोटे बेटे रविकरण को भी लाठियों से पीटा गया।

घायलों को पहले नगौद अस्पताल ले जाया गया, फिर सतना जिला अस्पताल रेफर किया गया। मंगलवार सुबह करीब 8 बजे इलाज के दौरान जयराम की मौत हो गई।

परिवार के मुताबिक, जिस जमीन पर रविशंकर पगरा बना रहा था, उसी को लेकर विवाद चल रहा था। सिंहपुर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। आरोपियों की तलाश जारी है।

बिजली कर्मचारियों से मारपीट पर सरपंच पति ने एसपी से दी सफाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के गढ़ थाना क्षेत्र के देउर गांव में 15 जून को बिजली विभाग के कर्मचारियों के साथ हुई मारपीट के मामले में आरोपी सरपंच पति लक्ष्मण यादव ने खुद को निर्दोष बताया। उन्होंने मंगलवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय में ग्राम पंचायत के कई लोगों के साथ ज्ञापन सौंपकर दावा किया कि घटना के समय वह मौके पर मौजूद नहीं थे। लक्ष्मण यादव के अनुसार, 13 जून की रात गांव में एक बच्ची के चोरी होने की घटना के बाद लोग डरे हुए थे। 15 जून की रात बिजली कर्मचारी लाइन ठीक करने आए, जिन्हें ग्रामीणों ने चोर समझकर मारपीट की। यादव ने कहा कि उन्हें रात 12 बजे नंदलाल यादव का फोन आया, तब वे मौके पर पहुंचे। उस समय मारपीट हो चुकी थी। उन्होंने कर्मचारियों को बचाकर संजय गांधी अस्पताल भिजवाया और उनके अधिकारी से बात की, फिर भी उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज हो गई। वहीं ज्ञापन देने आईं महिलाओं और ग्रामीणों ने कहा कि वे सरपंच के बुलावे पर आए, लेकिन घटना के बारे में उन्हें जानकारी नहीं। दूसरी ओर, बिजली कर्मचारियों ने पहले ही लक्ष्मण यादव का नाम लिया था। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विवि देश के टॉप टेन विश्वविद्यालयों में शामिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय एमसीयू रीवा ने इंडिया टुडे-मुद्रा सर्वे 2025 में देश के टॉप टेन बेस्ट कॉलेजेस में स्थान हासिल किया है। यह उपलब्धि लगातार दूसरे वर्ष मिली है। सर्वे में एमसीयू को बेस्ट कॉलेजेस ऑफ इंडिया 2025 में छठा स्थान और टॉप टेन कॉलेजेस विथ बेस्ट वैल्यू फॉर मनी श्रेणी में चौथा स्थान प्राप्त हुआ। द वीक-हंसा रिसर्च सर्वे 2025 में भी एमसीयू को इंडियाज बेस्ट कॉलेजेस की टॉप टेन सूची में शामिल किया गया। बतादें कि सरकारी और निजी दोनों विश्वविद्यालयों को शामिल करने वाले इस सर्वे में एमसीयू मध्यप्रदेश का एकमात्र सरकारी विश्वविद्यालय है, जो शीर्ष पर रहा। कुलगुरु प्रो. विजय मनोहर तिवारी ने इसे विश्वविद्यालय की 35 वर्षों की यात्रा में शानदार टीम वर्क का परिणाम बताया। उन्होंने शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि बेहतर गुणवत्ता के साथ छात्रों को दक्ष बनाने में मदद करेगी। उन्होंने भविष्य में और नवाचारों का वादा किया। इस उपलब्धि से एमसीयू में हर्ष का माहौल है।

जनसुनवाई में 119 आवेदकों ने अपनी समस्यायें सुनाई

सुपिया के निवासियों ने आम रास्ता खोले जाने का दिया आवेदन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट में प्रति सप्ताह आयोजित होने वाली जनसुनवाई में आज 119 आवेदकों ने अपने आवेदन प्रस्तुत किये। सुपिया के निवासियों ने आम रास्ता खोले जाने का आवेदन दिया जिसे तहसीलदार हुजूर को कार्यवाही के लिये प्रेषित किया गया। जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर, अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी एवं संयुक्त कलेक्टर पी.के. पाण्डेय ने राजस्व पेंशन, खाद्य, पशुपालन आदि विभागों की शिकायतों को संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया।

जनसुनवाई में देवरा निवासी प्रेमवती, बरहठा निवासी आयोध्या प्रसाद पाल, रतहरा निवासी मुद्रिका प्रसाद गौतम तथा भनिगवां निवासी रमेश प्रसाद पाण्डेय के सीमांकन के आवेदनों को संबंधित तहसीलदार को प्रेषित कर कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। इसी प्रकार नंदीलाल निवासी कोष्ठा के सीमांकन की नकल दिलाने के आवेदन को एसडीएम रायपुर कर्चुलियान तथा शिवकुमार द्विवेदी सगरा निवासी के शासकीय नाले से अतिक्रमण हटाकर स्टाप डैम को खोले जाने के आवेदन को एसडीएम हुजूर को कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया। पारसनाथ पटेल बांसी के खाता वटबारा करने तथा तमरादेश के रमेश प्रसाद पटेल के फर्जी नामांतरण पर रोक लगाने के आवेदन पर तहसीलदार हुजूर को कार्यवाही करने के निर्देश जनसुनवाई में दिये गये।

जगन्नाथ पटेल उमरी निवासी ने पट्टे की जमीन में अवैध सड़क निर्माण पर रोक लगाने के आवेदन को एसडीएम मनगवां को, रामफल साहू निवासी शिवपुर्वा के पुस्तैनी भूमि से कब्जा हटाने के आवेदन को एसडीएम गुढ़ को, जगदीश कोल निवासी गोदरी नं. 4 के नहर मुआवजा भुगतान के आवेदन को भूअर्जन अधिकारी को, उदय प्रताप सिंह सुजवार निवासी के शासकीय हैण्डपंप से निजी सिंचाई कार्य को रोकने के आवेदन को कार्यपालन यंत्री पीएचई को कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये।

पुलिसकर्मियों को अब नहीं मिलेगा कार्यवाहक प्रमोशन, पुलिस मुख्यालय ने लगाई रोक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भोपाल पुलिस मुख्यालय यानी पीएचक्यू ने पुलिस विभाग में कार्यवाहक प्रमोशन की व्यवस्था पर तत्काल रोक लगा दी है। अब पुलिसकर्मियों को वास्तविक प्रमोशन दिया जाएगा। इस फैसले से रीवा सहित पूरे मध्यप्रदेश में लंबे समय से पदोन्नति का इंतजार कर रहे अधिकारियों और कर्मचारियों में खुशी की लहर है। दरअसल 10 फरवरी 2021 को विवेचकों की कमी को पूरा करने के लिए कार्यवाहक प्रमोशन की व्यवस्था शुरू की गई थी। इसके तहत रीवा जिले में 500 से अधिक आरक्षकों को प्रधान आरक्षक, एएसआई, एसआई और निरीक्षक के पदों पर कार्यवाहक के रूप में पदोन्नत किया गया। हालांकि, इससे उनकी जिम्मेदारियां बढ़ीं, लेकिन वेतन और भत्तों में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई, जिससे कर्मचारियों में असंतोष था। पीएचक्यू ने इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए कार्यवाहक प्रमोशन को पूरी तरह बंद कर दिया। अब वास्तविक पदोन्नति का रास्ता साफ हो गया है, जो पुलिसकर्मियों के लिए बड़ी राहत की खबर है।

मछली मारने पर 15 तक रहेगा प्रतिबंध

रीवा. वर्षाकाल का आरंभ मछलियों का प्रजनन काल होता है। इसे ध्यान में रखते हुए कलेक्टर प्रतिभा पाल ने जिले के सभी जलाशयों में 16 जून 2025 से 15 अगस्त 2025 तक मछली मारने पर प्रतिबंध के आदेश दिए हैं। इस अवधि में मछली का शिकार, विनिमय तथा परिवहन पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। यह आदेश मध्यप्रदेश नवीन मत्स्योद्योग नियम 1972 के तहत जारी किया गया है। प्रतिबंध का उल्लंघन करने पर एक वर्ष के कारावास अथवा पांच हजार रुपए के जुर्माने से दण्डित किया जाएगा। प्रतिबंध की अवधि में कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार का मत्स्याखेट न करे।

जामुन का लालच देकर, 4 साल की बच्ची से चचेरे भाई ने किया दुष्कर्म

आवाज सुनकर पहुंची महिलाओं ने बचाया

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में सोमवार को एक चार साल की बच्ची के साथ उसके चचेरे भाई ने दुष्कर्म किया। घटना सोमवार दोपहर उचेहरा थाना क्षेत्र में हुई। बच्ची आंगनबाड़ी से लौटकर घर के पास जामुन बीन रही थी। इसी दौरान उसका 18 साल का चचेरा भाई वहां आया।

आरोपी बच्ची को मीठे जामुन का लालच देकर रेलवे ट्रैक की तरफ ले गया। वहां झाड़ियों में उसने बच्ची के साथ दुष्कर्म किया। बच्ची के रोने की आवाज सुनकर खेतों से लौट रही महिलाएं मौके पर पहुंचीं। आरोपी ने महिलाओं पर पत्थर फेंके। फिर भी महिलाओं ने बच्ची को बचा लिया।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पीड़िता को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बिरसिंहपुर में दो मंजिला दुकान में लगी आग, लाखों का सामान जला

3 फायर ब्रिगेड ने 4 घंटे में पाया काबू

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के बिरसिंहपुर तहसील के गल्ला मंडी चौक में स्थित भारती श्रृंगार मंदिर नामक दुकान में अचानक आग लग गई। दुकान में रखा लाखों रुपए का सामान जलकर राख हो गया।

मंगलवार सुबह आग की सूचना मिलते ही सभापुर थाना पुलिस और दमकल की गाड़ी मौके पर पहुंची। स्थानीय लोगों ने पास के बोरवेल से पानी डालकर आग बुझाने की कोशिश की। हालांकि, आग इतनी तेज थी कि काबू पाना मुश्किल हो रहा था।

चार घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। दो मंजिला इमारत पर लगी आग को तीन फायर ब्रिगेड और स्थानीय लोगों की मदद से बुझाया जा सका।

गुप्ता की ये दो मंजिला दुकान कॉस्मेटिक्स और चूड़ियों से भरी थी। आग से आसपास की दुकानों को भी खतरा है। पुलिस ने सुरक्षा के लिए पास की दुकानों को खाली करा लिया है। कोटर और जैतवारा से अतिरिक्त दमकल वाहनों को बुलाया गया है। आग लगने का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो सका है।

भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा निकलेबी 27 को, भक्तों को देंगे दर्शन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। 27 जून को भगवान जगन्नाथ रीवा में नगर भ्रमण पर निकलेंगे। [ड्डस्नस्न] पंद्रह दिनों तक लक्ष्मण बाग में उपचार के बाद स्वस्थ हुए भगवान की शोभायात्रा लक्ष्मण बाग से शुरू होकर किला परिसर पहुंचेगी। जहां महाराजा पुष्पराज सिंह भगवान का शाही स्वागत करेंगे, जो रीवा की राजपरिवार की परंपरा और आस्था को दर्शाएगा। इसके पश्चत रथ यात्रा बिछिया, उपरहटी, जय स्तंभ चौक और कॉलेज चौराहा होते हुए मानस भवन पहुंचेगी, जहां भगवान जगन्नाथ रात्रि विश्राम करेंगे। और अगले दिन भक्तों को दर्शन देंगे। व्यापारी संघ और हिंदू धर्म परिवार संगठन यात्रा मार्ग पर पुष्प वर्षा और माल्यार्पण के साथ भव्य स्वागत करेंगे।

सीएससी वीएलई कार्यशाला और प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के कृषि विज्ञान केंद्र सभागार में एक दिवसीय सीएससी वीएलई कार्यशाला और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि सीएससी राज्य प्रमुख अतुलित राय और कार्यक्रम अध्यक्ष जिला सहकारी बैंक के मुख्य कार्यपालन अधिकारी ज्ञानेंद्र पाण्डेय थे।

सीएससी राज्य प्रमुख ने सीएससी की मौजूदा और नई सेवाओं, जैसे लोन बाजार, डिजिटल सिग्नेचर, सीएससी ओलंपियाड, आधार सेवाएं, बैंक कियोस्क, आईआरसीटीसी, और सीएससी सफर के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने सेवा गुणवत्ता सुधार के लिए संचालकों से सुझाव मांगे और महिला संचालकों को स्वरोजगार के माध्यम से सशक्तिकरण के लिए प्रेरित किया। राज्य कार्यालय से आए रवि सिंह ने इंश्योरेंस सेवाओं, सागर गुप्ता ने बैंकिंग सेवाओं, और संकल्प सोनी ने बिजली बिल व अन्य सेवाओं की जानकारी दी। डीजीपे सेवा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए जिले के सीएससी संचालकों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में जिला प्रबंधक रवि शंकर मिश्रा, विक्रम पाण्डेय, चैनल पार्टनर प्रतिनिधि, विभिन्न अंचलों के सीएससी संचालक, और महिला समूह की सदस्य उपस्थित रहीं।

मैहर में घर के बाहर से युवक का अपहरण, तीन आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)।मैहर सोमवार शाम 6 बजे अरविंद लोनी नाम के युवक को लगभग 12 लोग उसे घर उठाकर ले गए। रात करीब 10 बजे पुलिस युवक को वापस ले आई है। मामला जिले के अमरपाटन थाने के ग्राम कुम्हारी का है।बताया गया कि अरविंद लोनी नाम का युवक अपने घर के बाहर बैठा था। अपहरणकर्ता एक चार पहिया वाहन और दो बाइक से आए थे। इनकी संख्या लगभग 10 से 12 थी। ग्रामीणों ने अपहरणकर्ताओं को रोकने का प्रयास किया।इस दौरान अधिकतर अपहरणकर्ता भाग निकले। हालांकि, ग्रामीणों ने एक आरोपी अमित कुशवाहा को पकड़ लिया। ग्रामीणों ने उसकी पिटाई की और फिर पुलिस के हवाले कर दिया।

आरोपियों का पीछा करते गायब हुए सिद्धार्थ लोनी, पुष्पेन्द्र लोनी को वापस ले आई है। इसके अलावा कुछ संदेही को भी पुलिस ने पकड़ा है। पुलिस ने आरोपी पुष्पेंद्र कुशवाहा, जैकी कुशवाहा को हिरासत में लिया है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।